TRANSCRIPTION OF M.M. GOPE. (HOTEL MAZDOOR LEADER)
(on by Bobby Poulose)

Q. : शुरू से आप जानते हैं कि यह (लेबर हिस्ट्री) जो प्रोजेक्ट है लेबर हिस्ट्री का प्रोजेक्ट है और इसका प्रोपोस है कि ट्रेड यूनियन के तमाम लीडर की जिन्दगी का इतिहास। इसमें उंपद विबने यह है कि इसमें उनके जीवन की तमाम हिस्ट्री भी आ जाए और आगे जाकर जीवन में जब वे लेबर मुवमेंट में आए ओर कैसे वो लेबर मुवमेंट में रहे और कैसे -कैसे उन्होंने फाइट किया स्टडी किया। तो एक तरह से life history or labour movement और आपको जहां तक मैं जानता हूं तो आप होटल कर्मचारी के ऑल इंडिया लेवल के लीडर हैं और होटल इंडस्ट्री बहुत important area है। हमारा इंटरव्यू हुआ वी.डी. शर्मा के साथ तो वहां पर भी बता रहे थे कि होटल इंडस्ट्री के बारे में। तो इसलिए यह प्रोजेक्ट एम.एन. जोशी इंस्टीटयूट की तरफ से और एन.एल.आई और एसोसिएशन आफ लेबर हिस्टोरियन इन तीनों ने मिलकर यह प्रोजेक्ट शुरू किया है। तो आपसे मेरी यही गुजारिश है कि आप अपने लाइफ हिस्ट्री हमारे साथ शेयर करें। शुरू से जब से आप पैदा हुए थे कैसे आप लेबर मुवमेंट में आए। जिससे कम से कम एक रिकार्ड तो रहे।

Ans. 1936 में जब मैं सिर्फ 6 साल का था तो हमारे गांव बिहार में जमींदारी व्यवस्था थी अंग्रेजों का राज था, कानून सब जमींदारों का चलता था और पुलिस भी जमींदारों के कहने पर चलती थी और सजा भी जमींदार ही देता था यहां तक कि किसानों को जान से भी मारता था। जो मेरे परिवार के साथ वाक्या हुआ वो इस तरह था कि दिसम्बर के महीने में धान कट कर के सरकारी खाद्यान्न में आ गए तो उस जमाने में जमीन बटाई पर चलता था, जमींदार के सभी पैदाबार का हिस्सा ले लेता था और खलियान में सब धान बंट गया तो सरकारी धान में हजारों मन के हिसाब से जमा था और किसानों के पास जो हिस्से में आया वह बहुत थोड़ा अनाज था इसी बीच में आंधी तूफान के जब, आसार नज़र आने लगे तो जमींदार ने आर्डर दिया कि सरकारी गल्ला पहले गोदाम में जाएगा मेरे पिताजी ने जमींदार से हिम्मत करके सिर्फ इतना ही कहा कि आपके पास तो हजारों मन गल्ला है पर हम गरीबों के पास तो थोड़ा सा गल्ला है और वह गया तो हमारे बच्चे भूखे मर जाएंगे इसलिए हमारा गल्ला पहले घर में ले जाने दीजिए इस गुनाह के ऊपर जमींदार ने गांव की जमींदारी कचहरी में बुलाकर इतनी मार मारी कि वो फिर कभी नहीं उठे और कुछ ही दिनों में उनका स्वर्गवास हो गया। ये सब मेरी आंखों के सामने घटा उस वक्त मैं लगभग 6 साल का था। कुछ दिनों के बाद यानी ज़ब मैं 7 साल का हुआ 1937 में जमींदार ने कहा मेरे बाप के ऊपर लगान बाकी था और उसके बदले मुझे और मेरे बड़े भाई को उनके घरों में काम करना पड़ेगा वो दोनों भाइयों को ले गए। बड़े भाई को जमींदार के चाचा के पास शहर में छोड़ा और मुझे अपने गांव जज़पा ले गए उस उम्र में मेरे लिए क्या काम था उसकी लड़की थी उसके साथ मुझे खेलना होता था और मुझे बड़े छोटे का कोई ज्ञान तो था नहीं उस लड़की ने मेरे चाटा मारा तो मैंने भी उसे मारा बदले में मेरी पिटाई जमींदार करता था। तंग आकर एक रात के बारह बजे मैं अपने बड़े भाई के पास जाने के लिए गांव से निकल पड़ा। अंधेरी रात बारिश हो रही थी। सवेरे के वक्त मैं औरंगाबाद शहर पहुंचा। बड़े भाई के पास जब, पहुंचा तो जमींदार के चाचा ने कहा यहां आ गया है तो यहीं रह। उस दिन उसका दामाद आया भागलपुर से महादेव बाबू वकील थे। उन्होंने कहा कि

इस बच्चे को मेरे पास भेज दो। तब जमींदार ने कहा ठीक है ले जा। मुझे फिर भागलपुर ले जाया गया 1937-38 में। भागलपुर कुछ दिन रहा तो वहां भी उसके बच्चों के साथ मेरी मार-पिटाई होती थी और मार पिटाई होती थी और मार पिटाई में मैं उनके बच्चों से कुछ ज्यादा तेज था पीट-पाट देता था तो वे मुझसे तंग हो गए और कहा कि इसे वापस भेज दो। उन्होंने मुझे टिकट कटा कर वापस भेजा पर मैं गांव नहीं गया एक कांग्रेसी नेता जिसे मैं जानता था औरंगाबाद में वो काफी जुलूस निकालता था और आश्रम बना हुआ था तो मुझे उनका काम बहुत पंसद था और मैं उनके साथ हो लिया। उनके साथ काम करता रहा दोनों मियां-बीबी लीडर थे उनके साथ मैं सब जगह जाता था। वो गिरफ्तार हो गए और मैं बेकार हो गया। मैं फिर वहां से औरंगाबाद शहर अपने बड़े भाई के पास पहुंचा तब तक जमींदार का एक दूसरा लड़का जो उसकी रिश्तेदारी में था उसने कहा आप मेरे साथ चलिए। उसका नाम था। रौनक बाबू वो मुझे ले गए पटना। पटना जाकर मैंने सोचा कि उसके चंगुल से भागना पड़ेगा और मैं वहां से भाग गया। किसी आई.सी. एस की कोठी के बाहर में बैठा था तब आया अपने बच्चे को लेकर निकली उसने मुझसे पूछा कौन हो, कहां से आए हो तब मुझसे कोई बात ही नहीं निकलती थी, बोलता नहीं नहीं था। उसको मेरे ऊपर दया आ गई। वो मुझे घर ले गई खाना खिलाया अपनी मालकिन से बोला। मालकिन ने कहा कि उसको भी अपने साथ रख लो। वो मालकिन थी आगरे की दरबारी परिवार की थी बहुत बड़ा परिवार था। ब्रिटिश सरकार के बड़े भक्तों में से थे। तो मैं उनके साथ आगरा गया बहुत बड़ा परिवार था बहुत बड़ी कोठी थी उसकी। उनका एक भाई पुलिस में था रामस्वरूप दरबारी। उसका तबादला हुआ झांसी में बहुरानपुर। वो मुझे अपने साथ ले गया उन्होंने भेज दिया। जो रखते थे उनका कोई लड़का नहीं था। उसकी मां मुझे बहुत पर करती थी और वो सोचती थी कि मैं भाग न जाऊं इसलिए पुलिस का डर दिखाती थी कि तु भागेगा तो जेल में बंद हो जाएगा। तो उस बुढ़िया ने मुझे डराया कि यहां से कोई बच्चा भागता है तो उसे जेल में बंद कर देते हैं और मैं डर गया। मैंने सोचा कि अगर ये जेल में बंद करेगी तो मुझे यहां से भागना चाहिए और आंख बचाकार मैं वहां से भाग गया। वहां से फिर इलाहाबाद आ गया जहां दरबारी परिवार का एक वकील राम स्वरूप का भाई उन्होंने पता दिया था कि कभी आओ तो हमारे यहां आना। मैं वहां गया वहां कोई काम तो नहीं था ऐसे ही घर में रहता खाता था और घूमता था। पड़ोस में ही एक कोठी थी एस. के. डांग जज थे हाई कोर्ट के। उनके यहां एक छात्र पढ़ता था विश्वनाथ यादव। उन्होंने मुझसे पूछा तब मैंने उन्हें अपनी सारी हिस्ट्री बताई तब उन्होंने कहा तू मेरे साथ रह। (और अब मैं एहसास करता हूं कि वो जरूर कामरेड रहा होगा) जब उसकी पढ़ाई खत्म हुई तो 1944 में वो मुझे देहरादून ले गया। उसका बाप वकील था वो भी बड़ा आदमी था जाहिर है कि वहां वो जामपुर में था। विश्वनाथ यादव की मां मुझसे दुखी हो गई कि बिना काम किए मैं वहां खाता-पीता हूं और मस्त रहता हूं। तो वह रोज़ उल्टी सीधी बातें कहा करती थी तब मैंने यादव जी से कहा कि ऐसी-ऐसी बात है कि वो नाराज़ रहती हैं मैं कोई और नौकरी कर लेता हूं। मैंने वहां से एक और नौकरी पकड़ी पहले side inspector की कुछ दिन वहां रहा उसके बाद एक पी.एन. के. कौल साहब थे। सेलूलर

ऑफ इंडिया के उनके साथ नौकरी लग गई। वहां उनके जो ससुर थे देशराज महाजन साब बहुत बड़े वकील थे हाई कोर्ट के। मई 1946 की छुट्टियों में वो डलहौजी आए। उनके पास भी कोई काम तो था नहीं उनके बच्चे थे उनके साथ ही खेलता था मारधाड़ होती थी उनके बेटी को भी मैं बहुत मारता था। मैंने कभी सोचा नहीं इसका क्या नतीजा होगा। वो मारते थे तो मैं भी मारता था वो थप्पड़ मारते थे तो मैं उन्हें 'पटक कर मारता था इससे वो भी डरते थे। मुझे वहां डांटा गया तो मैं चला गया चंबा का मेला देखा वहां से वापस आया एक नौकरी ढूंढी। सरदार निहाल सिंह आए हुए थे। बर्मा से दिल्ली की (एयरफोर्स) कैंटीन के मैनेजर थे। कैंटीन स्टोर डिपार्टमैंट एयरफोर्स में। तो उन्होंने कहा मेरे साथ कहा करो उनके साथ लग गया और दिल्ली आ गया 1946 में। बिहार से डलहौजी, डलहौजी से दिल्ली यहां आया तो वहां कर्फ्यू लग रहे थे हिन्दु-मुस्लिम में लड़ाई का माहौल था। उस समय कैंटीन स्टोर डिपार्टमेंट का जो ठेकेदार था हुसैन बख्श वो मुसलमान था। बंटबारे में वो पाकिस्तान चला गया। वो ला गया तो सरदार जी की नौकरी भी चली गई। इसके बाद वो कश्मीरी गेट पर आ गए वहां एक मकान में रहने लगे। उस समय कर्फ्यू का माहौल जारी था। उनकी जो दूसरी बीबी थी उसके दो बच्चे थे वो बहुत दुखी रहती थी वो चिड़चिड़ी थी। साहब देर से आते थे रात बारह बजे। उसने मुझसे कहा तुम 12 बजे तक जगना और जब साहब आ जाएं तो उनको खाना गर्म करके दे देना। वो बोली तुझे जगाने के लिए थी अब नौकर चाहिए। मैंने कहा कि मैं सोने जो रहा हूं तुम मुझे जगा देना। वो बोली तुझे जगाने के लिए थी अब नौकर चाहिए। मैंने कहा कि मैं वो बारह बजे तक जगा नहीं सकता। बोली हमें ऐसा नौकर नहीं चाहिए। मैं चला गया। साहब आए रात को मेरे बारे में पुछा। वो बोली उसे निकाल दिया। वो बोले इतनी रात को। मैं छत पर सोने चला गया था। कश्मीरी गेट पर बहुत बड़ी बिल्डिंग है रिटीज सिनेमा के आस-पास वहीं हम रहते थे। वो बेचारे मुझे ढूंढते रहे रात भर गाड़ी में। पुलिस थाने में मगर में तो छत पर सो रहा था मैं कहां से मिलता। सुबह जब हुई तो मैं गया साहब बोले तू कहां था मैं तुझे रात भर ढूंढता रहा। मैंने कहा में पैसे लेने आया हूं उसने मुझे अच्छे पैसे दिए और बोले तू घर जा दिल्ली का महौल अच्छा नहीं है। एक मुसलमान था वो होटल वर्कर था अपोलो होटल में। वो मुझसे बोला बता तुम और मेरा बेटा दोनों यहां से गांव चले जाओ दिल्ली का माहौल अच्छा नहीं है। तो 1946 में गांव गया वापस गए तो वहां जाकर देखा कि भाई साहब आ चुके थे जीमन जमींदार से लड़कर वापस ले ली थी और खेती बाड़ी करते थे मैं गया तो वो बहुत खुश गए। लेकिन खतरा अभी भी मौजूद था अगर मैं वहां रहता। 1946 में जमींदारी का दबदबा काफी था। में भेंट करके दिल्ली आ गया। दिल्ली में कश्मीरी गेट पर कार्टून केफे रेस्टोरेंट है। वहां के वर्कर के पास गया उन्होंने मुझे काम दिलाया तब से मैंने होटले इंडस्ट्री में प्रवेश किया। डसके बाद एक नौकरी मिली। ऑफिसर मैस में प्रिसिस पार्ट इंडिया गेट के पास। उस मैस में रहा किचिन में उसके बाद वेस्टर्न कोर्ट में थी। उसके बाद आजादी मिल गई। आजादी के बाद 1948 में निरूला फार्मिंग हाउस में वेटन की नौकरी में आ गया लेकिन वहां कोई यूनियन नहीं थी मालिकों का राज था सुबह 6 बजे जाते थे रात को 12 बजे आते थे तनख्वाह थी 2 रूपये 3 रूपये 5 रूपये 8 रूपये। अगर प्याली

टूट जाती तो उसके पैसे कट जाते कोई छुट्टी नहीं थी बीमारी की कोई छुट्टी नहीं होती थी। हमारे साथियों ने मिलकर युनियन बनाई हम उसके मेम्बर बन गया। पहला केस आया कि एक वर्कर को उन्होंने नौकरी से निकाल दिया केवल इसलिए कि वो एक दिन नहीं आया था क्योंकि उसके मकान मालिक ने उसे घर से निकाल दिया और उसी दिन उसके यहां डिलीवरी हो गई तो उस दिन वो आ नहीं पाया अगले दिन आया। हमने मालिक से कहा कि ये अन्याय है इसी मजबूरी थी लेकिन उन्होंने नहीं सुना। उसी वास्ते हमने स्ट्राइक की 1449 में। 1948 की पहली स्ट्राइक निरूला में हुई जिसका प्रभाव पूरी दिल्ली में पड़ा था और उसके प्रचार के लिए हमने एक फुल टाइम रखा था तो फुल टाइमर को हैंडविल बना कर भेजा तमाम वर्कर्स में बांटने के लिए तो वेन्गर के मालिक ने मैंनेजर ने हमारे फुल टाइमर की पिटाई कर दी और पुलिस उनके साथ थी और उसे पुलिस के हवाले कर थाने में बंद कर दिया। हमें खबर आई कि हड़ताली मजदूरों में बहुत गुस्सा फैला। हमने सारी रात होटल के मजदूरों के साथी मीटिंग की और सुबह 4 बजे वेन्गर पर अटैक कर दिया। वेंगर के मैनेजर को मारा और उसकी तोड़ फोड़ करी और जितने रेस्टोरेंस्ट तोड़ सकते थे सुबह 4, 5 और 6 बजे तक तो वेन्गर रेस्टोरेंस्ट युनाईटेड कॉफी हाउस और the sea restaurant और अल्फा रेस्टोरेंट एक होता था पहले। उसमें जब घुसे तब तक पुलिस आ चुकी थी और सारा घेरा तक डाल लिया था? हम सब को फौरन जेल भेज दिया। उस समय के हमारे लीडर थे कामरेड इन्द्र सेन गुप्ता और अभी भी हैं। उन्होंने उस जुलूस को लीड किया था और उसी वक्त वो गिरफ्तार हुए हमारे सपोट में फिर स्ट्राईक हुई। कॅनाट प्लेस बंद रहा फिर गिरफ्तारी हुई 300 मजदूर और पकड़ गए। कूल मिलाकर मजदूरों को ले गए। दिल्ली गेट पर एक जेल था कैंप जेल? वहां ले जाकर बंद किया। वहां बहुत से पुराने लीडरों से मुलाकात हुई जो पहले से पुराने लीडरों से मुलाकात हुई जो पहले से ही बद थे कामरेड वाई.डी. शर्मा वगैरह। वो बड़े जेल में थे हमें छोटे जेल में भेज दिया। उनसे अलग करके तो हम कैंप जेल में रहे। वहीं जेल में हमारा मुकदमा चला। बाबा शिव चरण सिंह जो हमारे वकील थे पार्टी की तरफ से उन्होंने अंदर ही अंदर मुकदमा लडकर के पहले तो हमें 6-6 महीने की सजा दे दी जज ने लेकिन वकील साहब ने अपील करके तीन महीने बाद ही हमें बरी करा दिया। 3 महीने हम सब जेल में रहे। जब बरी होकर बाहर आए तो हमारी यूनियन खत्म हो चुकी थी, मजदूरों की नौकरियां छुट चुकी थी और हम जितने लीडर थे, हमारा नाम ब्लैक लिस्ट हो गया था। दिल्ली से बाहर हो गए थें पुलिस और मालिकों ने मिलकर हमारा नाम ब्लैक लिस्ट कर दिया था। उस समय मेरा नाम मुंद्रिका सिंह यादव हुआ करता था। फिर जब जेल से बाहर आया तो मुझे सारी परिस्थिति मालूम हुई तब सब साथी तो चले गए और मैं नाम बदल कर दिल्ली में रह गया। मैंने अपना नाम मुंद्रिका माधो गोप कर लिया ओर गोप बनकर 1950 में फिर हम गेलोर्ड ग्रुप में लग गए जिन्होंने ब्रांच खोला था कश्मीरी गेट में मीरा बैले रेस्टारेंट अब तो खैवर कहलाता है। वहां हम लग गए क्योंकि सर्विस में तो हम एक्पर्ट थे तो वहां काम किया और कचहरी की वजह से klints बहुत पंसद करते थे हमारी सर्विस को। इस पीरियड के अंदर हमारे जो लीडर थे जिनको नौकरियां नहीं मिली थीं हम अपनी रोज की कमाई से

उनको भी पालते थे उसमें एक स्टूडेंट भी थे, संतोष चटर्जी जो हमारी मदद कर रहे थे यूनिवर्सिटी में लॉ कर रहे थे उनका खर्चा भी हमने उठाया लेकिन उसी बीच के अंदर कामरेड बी.टी. रन्धेलवी। जब पार्टी के जनरल सेक्रेटरी बने तो पार्टी में काफी था, पार्टी पर बैन थी 1948 में हम पार्टी मेम्बर बने जब हम 18 साल के हुए और मेंबर बनने के बाद हमने पाया कि पार्टी के अंदर काफी पढ़े लिखे और अनपढ़ों में बड़ा डिवीजन है। बुद्धिजीवी गैर बुद्धिजीवी, पढ़े लिखे ऐसे होते हैं, वैसे होते है वर्किंग क्लास सब कुछ है हम तो वर्किंग क्लास थे और यहां ये सब चलता रहा, और कई लोग जेल में थे बहुत अल्डरग्राउंड थे। जो बाहर थे, उन्हें हमारे पूरे ब्रांच को पार्टी से expelt करना था। जब हमें expelt किया तो जो हमारे से बाहर लोग थे उन्होंने मिलकर दिल्ली में पैरलर पार्टी बना लिया। जितने भी दफ्तर थे सब पर हमने कब्जा कर लिया। पहाड़गंज के दफ्तर पर, चांदनी चौक के दफ्तर पर, सब्जी मंडी के दफ्तर पर, सिर्फ जामा मस्जिद दफ्तर रहता था। इसी बीच में अंडर ग्राउन्ड पीरियड में कामरेड वाई डी शर्मा ने हमारे साथ मीटिंग करी, मीटिंग करने के बाद उन्होंने मुझे किया कि हम लोग गलत राह पर हैं, हम लोगों ने फैसला लिया कि जितनी भी हमने Rival Union बनाई है, फेडरेशन ऑफ डेमोक्रेटिव यूथ बनाया था यूनिवर्सिटी वर्कर यूनियन बनाया था; ट्रांसपोर्ट वर्कर यूनियन बनाया था और होटल वर्कर यूनियन तो हमारी थी ही जिसको हमने रिऑगनाइज किया। सिविल लाइन और फतेहपुरी से लेकर के फिर आ गए। उसके बाद हम पार्टी की पूरी ब्रांच लेकर 1951 में हम फिर वापस आ गए। उसके बाद होटल वर्कर यूनियन को हमने फिर खड़ा किया और खड़ा करके संघर्ष शुरू किया डिमांड करके। इसी बीच मालिकों को पता लग गया कि मेरा असली नाम कुछ और है और नाम बदल कर मैं रह रहा हूं तो उन्होंने मुझे निकाल दिया तब तक हम यूनियन बना चुके थे जैसे ही निकाल हमने हड़ताल कर दी। हड़ताल हो गई तो उन्हें अपना फैसला वापस लेना पड़ा तब से मैं होटल इंडस्ट्री में हूं यूनियन लीडर बना 1951 में मैं होटल वर्कर यूनियन का जनरल सेक्रेटरी बन गया था। सारी दिल्ली में हमने इस बीच अपनी मेम्बरशिप बढ़ा ली थी। 1955 में हमने होटल इंपीरियल, मैडन, ऑबराय तीनों होटलों में स्ट्राइक की विकटिमाइजेशन के खिलाफ। इसमें हमारे 80 लीडर निकाले गए थे जिनको कोर्ट से वापस लाकर सुप्रीम कोर्ट में भी हम जीतकर आए। इसी केस में हिस्ट्री कायम हुआ सुप्रीम कोर्ट ने ये ऑर्डर दिया कि जहां स्टेंडिंग आर्डर नहीं है वहां के मालिक को without paying नौकरी से निकालने का अधिकार नहीं है। इस लड़ाई में कॉमरेड वाई.डी. शर्मा का अहम रोल रहा होटल वर्कर की लड़ाई में कामरेड वाई. डी. शर्मा का रोल और कामरेड एच एम परवाना ऑबराय जो था ये इसकी मोनोपोली होटल है और कोई मालिक था नहीं यही तीन होटल बड़े थे सरकारी भी इससे दुखी थी। सरकारी मेहमान लोगों को ही बहुत नुकसान होता था पैसे की जयादा लेता था। पंडित जवाहर लाल नेहरू को ये अहसास हुआ कि हमें अपना होटल खोलना चाहिए। वो गए सोवियत यूनियन वहां उन्होंने अपना जो सरकारी होटल देखा देखने से उन्हें प्रेरणा मिली कि हमें सरकारी होटल खोलना चाहिए और आकर उन्होंने अशोका होटल बनाने का निर्णय ले लिया। अशोका होटल 1955 में बनकर तैयार हुआ। 1956 में शुरू हुआ तो उसमें भर्ती शुरू हुई इसी साल

सरकार ने प्रॉबिशिन ऑर्डर निकाला था जिससे रेस्टारेंट में दारू बिकना बंद हो जाएंगे। जिसकी वजह से 800 मजदूर रिटरेज हो गए इन 800 मजदूरी को लेकर मैं पंडित बल्लभ गोविन्द पंत के पास लेकर गया। मैंने कहा कि आपकी नीति की वजह से 800 मजदूर रिटरेज हुए हैं। पंत जी बहुत नाराज हुए वो बोले आप क्या चाहते हैं कि हम दारू बेचे। मैंने कहा कि मैं बिल्कुल नहीं चाहता कि आप ऐसा करें लेकिन हम चाहते हैं कि इन 800 मजदूरों को नौकरी वहां पहले मिले जहां सरकारी होटल खुल रहा है क्योंकि यही काम वो करने वाले हैं आपकी नीति से एट्रैक्ट हुए हैं आपको मदद करनी चाहिए। उसने एग्री कर लिया उन्होंने अशोका में कहा कि जो मजदूर रिटरेज हुए है उन्हें पहले रखो फिर किसी और को रखो। 800 मजदूरों को लेकर मैं अशोका होटल गया 1956 में। इसी बीच में 1955-56की हड़ताल भागा दौड़ी की वजह से मेरी हेल्थ बहुत खराब हो गई थी मुझे टी.बी. हो गयी। मैं 6 महीने अस्पताल में हा। 6 महीनों में तमाम होटल के मजदूरों ने मेरे लिए स्पेशल कमरा लिया। 50 रू. रोज का और मेरा स्पेशल ट्रीटमेंट कराया और ट्रीटमेंट के बाद फिर दो महीने हुए रानी खेत में हिल स्टेशन और वापस आकर के कहा कि आप सिर्फ ऑफिस देखेंगे बाकी जो है दूसरा होल टाइमर रखा। दूसरा होल टाइमर रख लिया डी. जे. सिंह प्राइवेट सेक्टर को वो देखेगा आप सरकारी होटल को देखिए। इकट्ठे थे तब से मैं अशोका होटल को aim बनाकर ही बीमार हुआ था और हमने टेक ओवर कर लिया। और फिर सरकारी होटल खुलते ही चले गए जनपथ होटल खुला, रंजीत खुला, लोदी खुला और अब पूरे हिन्दुस्तान में इसके 26 होटल हैं। और सभी होटल में हमारी यूनियन है, ऑल इंडिया बाडी है। मैं उसका जनरल सेक्रेटरी रहा हूं और इस प्रोजेक्ट में स्ट्रगल चल रहे हैं, जितने अब तक सैटलमेंट हुए हैं सारे सैटलमेंट पर हमारे दस्तखत हैं। 1956 में जब सारी इंडस्ट्री में स्ट्राइक हुई वेज वर्क के लिए तब वेज वर्क की स्थापना हुई वेज वर्क ने अपना रेजमेंट सेशन 1967 में दिया और होटल इंडस्ट्रीज को ऐट फार्म इन दा इंडस्ट्री ले आए और उसमें डी.ए.सिस्टम छुट्टियों का सवाल आदि जितने भी हमारे डिमांड थे उसमें काफी कुछ हमारे वेज बोर्ड ने कंसाइडर किया उसमें हमारे वाई.डी. शर्मा भी मैम्बर थे एक इंटक का था और चेयरमैन उसके ट्रिबनल ने और जज थे कृष्णा मुर्ति। इनकी recommendation के मुताबिक होटल इंडस्ट्री को तीन भागों में बांटा गया ए बी और सी। ए फाइव स्टार में गए, बी फोर स्टार वाले और सी में बाकी सब, और इसी के हिसाब से पे स्केल, डी.एन.एस एलाउंस सारे निर्धारित किए। इसे लड़ाई के बाद फिर हमने पब्लिक सेक्टर की अलग लड़ाई छेड़ी कि हमारी तनख्वाह और पब्लिक सेक्टर में गर्वमेंट इम्पलॉय होने चाहिए और जो स्ट्रगल चली उसे वेज बोर्ड बनी। उस वेज बोर्ड में भी हमारी वेज रिनयू कमेटी बनी। हमारी तरफ से कामरेड वाई.डी. शर्मा मेम्बर रहे और उस वेज रिवयू कमेटी की रिपोर्ट आई उसने सरकारी होटल में प्राइओरिटी ली। पहले डिरपेरिटी बहुत थी तनख्वाह में अलाउंस में सबको खत्म करके ऑल ओवर इंडिया यूनिफर्म पे स्केल यूनिफार्म अलाउंस ले आए। लाने के बाद फिर हर तीसरे साल बाद वेज रिनयू की सेटलमेंट होती रही और जो इसमें बेनिफिट दिए जाते रहे अब ये पोजिशन आ गई है कि इस वक्त सरकारी होटलों के मुलाजिम आ गए लेकिन जबसे सरकारी होटलों की स्थापना हुई तबसे प्राइवेट सेक्टर के मालिक इसके खिलाफ

आवाज उठाते रहे और शुरू से आबरॉय और टाटा कहते थे कि ये सरकार का काम होटल चलाना नहीं है लेकिन नेहरू जी ने ये कभी नहीं माना। नेहरू जी ने हमेशा कहा कि ये हमारी इक्नोमिक पॉलिसी है तुम अपनी जगह फलो-फूलो सरकारी क्षेत्र अपनी जगह फले फूलेंगे और ये सब चलता रहा। लेकिन दबाव मालिकों का पब्लिक सेक्टरों के खिलाफ जारी रहा जिसके खिलाफ तमाम ट्रेड यूनियन मुवमेंट ने मुकाबला किया। 1969 में बैंकों के मजदूरों ने जबरदस्त स्ट्रगल करके बैंकों को नेशनलाइज कराया। इसके बाद कोल इंडस्ट्री का Industrialised हुआ। एलआईसी, जीआईसी और दूसरे हेवी इंडस्ट्रीज थे जो पब्लिक सेक्टर में आए। सोवियत यूनियन की मदद से सोशलिस्ट कैंप की मदद से और इसके वर्किंग क्लास को देश में एक अच्छा हिस्सा मिला और इसलिए जब एटक का सेशन हुआ 1961 में तो नारा दिया "Defend the public sector expend the public sector and democratise the public sector." यानि वर्कस का मेनेजमेंट में पाटिसिपेशन हो। ये 1961 में एटक ने नारा दिया इसका प्रभाव सारी इंडस्ट्री में पड़ा। आंदोलन भी हुए और उससे पब्लिक सेक्टर को आगे चलाने में आंदोलन को बहुत मदद मिली। अब जो सरकार बदल गई नरसिंह राव के पीरियड से नीतियों में जो परिवर्तन आया प. जवाहर लाल नेहरू की नीतियों के खिलाफ जब ये उलटी तरफ चलने लगे तब इसके खिलाफ हमने स्ट्रगल शुरू कर रखा है और लगातार करते चले जा रहे हैं। इस पर बहुत मुकदमें चले, झगड़े भी चले और आज भी चल रहे हैं और अभी भी arbtrilation के खिलाफ सरकारी होटलों में काम करने वाले मजदूर लगातार संघर्ष कर रहे थे। मैं होटल वर्कर यूनियन का लीडर बनने के बाद मैं सिर्फ होटल इंडस्ट्री में रहा बल्कि जब एटक में भी ऑल इंडिया वर्कर फेडरेशन की जब स्थापना हुई इसका मैं जनरल सेक्रेटरी बना 1973 में उसके बाद वर्किंग कमेटी का मेम्बर मुझे फेडरेशन की तरफ से एटक में बैठाया गया। एटक के जनरल काउंसिल में मै 61 के बाद ही आ गया था। अगला सेशन एटक का जो हमने attend किया हमने 1964 में कलकत्ता बी.सी. राय गारमेंट के अंदर और उसके बाद अब तक जितने भी सेशन हुए सभी हमने attend किए और जनरल काउंसिल पार्किंग कमेटी में 73 के बाद एटक के डे टूडे प्राब्लम में भी जो हमसे कहा जाता है एटक की रतफ से मैं कोशिश करता हूं उसे पूरा करने के लिए। मेरी जो टोटल लाइफ रही है पहला फेस में मैं काम्ब्रेड लीडर था दूसरे फेस में चाइल्ड लेबर और तीसरे फेस में मैं होटल वर्कर रहा और उसके बाद मैं ट्रेड यूनियन लीडर स्टेट का मैं पार्टी का लीडर रहा 67 से 95 तक और अब मैं स्टेट सेक्रेटरी मेम्बर हूं नेशनल काउंसिल में हूं जो पार्टी की, जिम्मेदारी मुझे मिलती है उसको भी निभाता हूं और ट्रेड यूनियन को जो काम मुझे मिलता है उसे भी मैं निभाता चला जाता हूं। मेरा ये तजूर्बा है कि ये सिर्फ कम्युनिस्ट पार्टी में ही संभव है कि मेरे जैसा वर्कर जो जिन्दगी में कभी स्कूल नहीं गया हो जो पहले बंधुआ मजदूर रहा हो ऐसे वर्कर को इतना विकास करने का मौका किसी दूसरी पार्टी में संभव हो भी नहीं सकता।

Q. : आपने बहुत अच्छी पिक्चर अपनी जिन्दगी के बारे में बताया पर मैं इसमें कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूं। कहां आप पैदा हुए थे? आपकी जन्मतिथि क्योंकि आपने 6 साल से शुरू किया।

Ans : ये मुझे अच्छी तरह से याद नहीं है और ये 6 साल भी मैंने इसलिए कहा क्योंकि 6 साल से कम बच्चे को कुछ याद नहीं रहता पर 1934 में जब पूरी इंडिया में भूचाल आया वो भी मुझे याद है। तो तब मैं चार साल का था तो 2 मई 1930 मेरी जन्मतिथि है।

Q. : आप कहां पैदा हुए थे?

Ans : मैं बिहार में चिलमी गांव में, थाना पड़ता है मदनपुर पोस्ट पड़ता है उमरा और जिला है औरंगाबाद, बिहार।

Q. : आपने अपने परिवार का जो बैकग्राऊंड बताया उस वक्त आप काम करते थे तो ऐसे में पढ़ने लिखने का तो सवाल ही नहीं उठता।

Ans : मैं कभी स्कूल नहीं गया। 6 साल की उम्र में तो बंधुआ मजदूर हो गया और 18 साल में आकर ट्रेड यूनियन में आ गया।

Q. : जिस तरह से आपने बताया तो इतनी छोटी उम्र में आपने इतना कुछ experience किया। तो मुझे लग रहा है कि बंधुआ मजदूर, चाइल्ड लेबर और इधर-उधर भागना और फिर अलग-अलग जगह काम करके अपनी जिन्दगी बिताना। तो ये एक अलग experience है?

Ans : यही experience है और पढ़ाई लिखाई का जहां तक ताल्लुख है मैं दुकानों के बोर्ड पढ़ा करता था कि ये क्या है। जब मैं निरूला में लगा था तो निरूला मालिक की जो बीबी थी वो छोटे बच्चों, मजदूरों को पढ़ाती थी तो निरूला की बीबी ने मुझे थोड़ा पढ़ाया क, ख, ग, ए, बी, सी उसके बाद हम उन अक्षरों को मिलाकर के पढ़ते रहे, सुनते रहे, चलते रहे, उनके भाषण सुनते रहे और उसके बाद मैं खुद भी अंग्रेजी में पढ़ने की कोशिश करता था तो मैं अंग्रेजी थोड़ा बहुत बोल लेता हूं, थोड़ा बहुत लिख भी लेता हूं समझ भी लेता हूं और हिन्दी भी थोड़ा बहुत लिख लेता हूं पढ़ तो पूरा लेता हूं, लिखने की हैंड राइटिंग में कुछ अच्छी प्रैक्टिस नहीं है इसलिए मुंह जुबानी तो सब कुछ कह सकता हूं पर लिख नहीं सकता क्योंकि कभी स्कूल तो गया नहीं हैंड राइटिंग बनी नहीं और अब जो मैं लिखूंगा दूसरे दिन कहोगे तो मैं पढ़ नहीं सकूंगा। मेरी अपनी डायरी नहीं पढ़ पाता कई बार।

Q. : आपने बताया कि कई जगह से आप भागे ओर निरूलाज़ में आप लगे और निरूलाज़ से पहले जो आपका काम था वो एस.एस. कैंटीन में?

Ans : उस कैंटीन में मेरा कोई ज्यादा रोल नहीं था मैं मैनेजर के घर में रहता था निहाल सिंह। मेरा काम होटल वर्कर का जो शुरू हुआ है वो कार्टने कैफे 1946 में। 1947 में प्रिन्सेस 1948 में निरूलाज में आया।

Q. : प्रिन्सेस पार्क में आप क्या थे?

Ans : किचनमेट। प्रिंसेस पार्क मिलिटरी ऑफिसर्स मैस था उसका कान्ट्रेक्टर था खुराना जी। इसके बाद में कई मैसिस में जैसे प्रिंसेस पार्क, बडौदा हाउस, पिस्टन हाउस। इससे छोड़ने के बाद निरूला में था 1948।

Q. : आपका इस वक्त का जो experience है ये है एयर फोर्स कैंटीन से जो आपने शुरू किया और फिर ये कार्टन कैफे तो इसके बारे में आपने बताया तो निरूलाज़ मं आने के बाद आप बता रहे थे तो मेरे ख्याल से ये स्ट्रगल यही.....

Ans : हां 1946 में मैं जब कार्टन कैफे में लगा तो वहां का मेजोरिटी वर्कर मुस्लिम था जो नाम बदलकर काम कर रहा था और उन्होंने मेरी बहुत मदद की। उसके बाद प्रिंसेस पार्क में आया तो उस वक्त 1947 का बंटवारा शुरू हो गया था और मुसलमान जितने भी थे निकाले जा रहे थे उनके दुकान लूटे जा रहे थे। प्रिंसेस पार्क में जो पीछे की तरफ में कैंटीन वर्कर थे हमने ये सोचा कि यह अच्छी बात नहीं है ये तो वर्कर हमारे साथ थे इनका घर कैसे टुटे इनको कोई कैसे मार देगा हमारे होते हुए हम लोगों ने अपने यहां के मुसलमानों को इकट्ठा करके पुराना किला पहुंचाया जहां सब मुसलमानों को इकट्ठा किया जा रहा था। सबको लेकर गए ओर हम यहां से उनके जरूरत की चीज खाने-पीने की रहने की वहां पहुंचाते रहे। मुसलमानों को हमने काफी कुछ बचाया हमारे दिलों में उनके लिए हमदर्दी रही क्योंकि वो होटल वर्कर थे और इसी तरह जब निरूला में आए तो वहां भी मुसलमान वर्कर थे कुछ नाम बदलकर रह रहे थे कुछ वैसे ही थे, तो उन्होंने भी ये देखा था तो उन्हें भी इस बात का अहसास था कि उन्होंने इस तरह से मुस्लिमस की मदद की। मेरे सामने सब दुकान जलाते रहे बंगाली मार्किट इधर -उधर लूट-लूट कर जो माल लाते थे उसे देखकर मुझे काफी तकलीफ होती थी, इस सब से उनका क्या भला होगा। शुरू से मेरी एक इच्छा रही है कि किसी दूसरे को ऐसे लूटना, मार-काटना अच्छा नहीं है। सियासी तौर से तो हम वो नहीं थे असली तौर पर हम देख रहे थे क्योंकि मुसलमान हमारे साथ भी काम करते थे, बड़ी मदद भी उन्होंने की तो मैंने कहा ये हमारे दुश्मन कहां से हैं ये तो सब बेकार की बात है, लेकिन फिर भी जब हमला होने का डर हुआ तो हमने वहां से जितने मुस्लिम वर्कर थे उन्हें इकट्ठा करके पुराना किला पहुंचाया उन्हें इतना प्यार था कि वो कहते थे कि हमारे साथ पाकिस्तान चलो हमने कहा कि भई यहां तो हम तुम्हें बचा रहे हैं पर वहां तुम हमें नहीं बचा पाओगे, मार दिया जाऊंगा। मैं तो लाहौर से ही आया हूं, देख कर आया हूं वहां की हालत।

Q. : लाहौर में जब 1946 मे थे तब वहां भी पार्टिशन आ रहा था तो वहां के बारे में बताइये।

Ans : वहां भी झगड़े चल रहे थे। शाम 6 बजे के बाद वहां कर्फ्यू लग जाता था तो हम उसी साल महाजन के साथ निकल कर दिल्ली चले आए। वहां भी उसका असर शुरू हो गया था। 1947 में हमारे सामने दिल्ली के अंदर इतना मार काट हुआ कि पहाड़गंज के दोनों तरफ फुटपाथ लाशों से भरा था और तुर्कमान गेट पर कई हफ्तों तक गोलियां चलती रहीं और सब्जी मंडी में गोलिया चलती रहीं हिन्दू-मुसलमानों के बीच ये सब हमारे सामने हुआ, हम ये सब देख रहे थे। हम पहाड़गंज की तरफ जा नहीं सकते थे इतनी बदबू आती थी वहां तो बारिश इतनी तेज आई कि सारी बदबू बहा कर ले गई।

Q. : 1948 में जब आप निरूलाज में काम कर रहे थे तब अगस्त में आपके वहां स्ट्राइक हुई तो आप वहां काम करते थे और स्ट्राइक करना ये भी तो एक बड़ा अगर सोचा जाए तो ये.....

Ans : गुस्सा था, जब हमने देखा कि सामने एक आदमी को बिना वजह नौकरी से निकाल रहे हैं, सुबह 6 से रात के 12 बजे तक तो ड्यूटी रहती थी और तनख्वाहें थोड़ी मिलती थी वो भी गारेंटिड नहीं थी तो फ्रस्ट्रेशन तो था लेकिन इस बात से लोगों में गुस्सा फैल गया और काम बन गया पहले निरूलाज़ में स्ट्राइक हुई उसके बाद सारे कनॉट प्लेस में हड़ताल हुई। हमारे सपोट में। झगड़े हुए फिर तो जेल-जाल, मुकदमेंबाजी फिर स्ट्रगल चल पड़ा।

Q. : उस वक्त आप किसी भी रूप से पार्टी से या कम्यूनिस्ट के रूप में या एक्टिविस्ट के रूप में नहीं थे।

Ans : निरूला में पार्टी मेंबर थे कामरेड चार्ली गोम्स बंगाली थे, पीटर गोम्स बंगाली थे और एक मुसलमान था वो भी कम्युनिस्ट था वो पाकिस्तान गया नहीं तो ये सब पार्टी के गार्डस थे। वहां उन्होंने हमें पॉलिटिकलाइज़ किया। बकायदा वहां कम्युनिस्ट पार्टी के अंडरग्राउंड लीडर आते थे शकील अहमद आते थे तो वहां पार्टी ब्रांच थी। ब्रांच ने देखा कि नए-नए लड़के आ रहे हैं इन्हें पॉलिटिकलाइज करो और हमें आगे बढ़ाया और हम जनरल सेक्रेटरी बने और वो ब्रांच बहुत दिनों तक रही और होटल इंडस्ट्री के ब्रांच शुरू से रेवोलुशनरी था आज भी है अब तो हमने अलग-अलग होटलों में ब्रच बना दिये हैं पहले एक ही ब्रांच होती थी और अब तो 8-9 ब्रांच है पार्टी की।

Q. : इसका मतलब है कि कारटन में आते आते निरूलाज़ तक तो वहां कोई कम्युनिस्ट टच नहीं था।

Ans : नहीं, उधर नहीं। कम्यूनिस्ट पार्टी से टच हुआ निरूलाज में आने के बाद। यहां पार्टी ब्रांच थी।

Q. : तो एक तरह से सोचा जाए तो ये पब्लिक रूप से स्ट्राइक करना ये सक प्लानिंग कब से शुरू हुई?

Ans : ये सब वहीं से शुरू हुआ। ये स्ट्राइक की प्लानिंग पार्टी ब्रांच करती है। स्ट्राइक में झंडा आगे जाने को कोई तैयार नहीं होता था डर के मारे क्योंकि लाल झंडा ले जाने का मतलब वो कहते थे कि बचोगे नहीं पुलिस और मालिक मिलकर उन्हें बंद करा देते थे तो कोई वर्कर डर के मारे लाल झंडा लेकर सड़क पर नहीं आता था और मुझे तो गुस्सा था जमींदारी के खिलाफ भी, जुल्म के खिलाफ भी क्योंकि हमने तो अपने सामने अन्याय देखा था तो शुरू से ही मैं झंडा लेकर खड़ा होता था। झंडा लेकर खड़ा होने के बाद पीछे मेरे सारे लोग खड़े होते थे तो उन्होंने देखा कि आगे ये लड़का है बहुत हिम्मत वाला है।

Q. : तो ये जो स्ट्राइक का मुद्दा था वो एक ही वर्कर का मुद्दा था।

Ans : हां एक ही आदमी का मुद्दा था शकील गफ्फार नाम का वर्कर निकाला गया था। मुद्दा तो यही था पर गुस्सा भी बहुत था। 6 से 12 ड्यूटी मार-धाड़ कम तनख्वाह पुलिस का दमन, कोई रूल रेगूलेशन नहीं ये सारा गुस्सा था तो इस गुस्से का किसी प्वाइंट पर तो विस्फोट होगा ही।

Q. : उस वक्त जब ये स्ट्राइक हुआ तो उसका क्या रिस्पोन्स था निरूलाज का जो मैनेजमेंट था, मैनेजर था.....

Ans : उन्होंने हम लोगों को ब्लैकलिस्ट कर दिया जेल से निकला तो मेरा कोई सहारा नहीं था क्योंकि जिस होटल में जिससे मिलने जाऊं उसकी नौकरी चली जाए इसलिए कोई भी मुझसे मिलते नहीं थे डर के मारे,

इतना डर हो गया था। एक मुस्लिम परिवार था, आदमी मुस्लिम था लड़की क्रिश्चन थी दोनों ने मोहब्बत में शादी की थी। हेतराम जी जिसके यहां मैं नौकरी करता था और 6 महीने तक उन्होंने खर्चा पानी दिया तब जाकर उसके बाद मैं मुझे नौकरी मिली।

Q. : इन्द्रसेन गुप्ता का भी आपने जिक्र किया इनके साथ आपका कैसे रिलेशन है।

Ans : ये उस वक्त हमारे पी.टी.यू.सी. के लीडर होते थे दिल्ली पार्टी के लीडर होते थे उन्होंने उस वक्त जब हमारा स्ट्रगल चला था ये उसमें आगे-आगे रहे।

Q. : जेल में आप सब कितने वर्करों को डाला गया।

Ans : 500 वर्करों को, क्योंकि बहुत से दूसरे वर्कर हमारे सपोर्ट में स्ट्राइक करके आ गए थे, वे बवेजा रेस्टोरेंट के थे, कुछ एम्बेसी यूनाइटेड कॉफी हाउस के थे, डेविको और नीचे क्वालिटी होता था।

Q. : ये सारे रेस्टोरेंट प्राइवेटली थे उस समय ?

Ans : अभी भी प्राइवेट हैं तो इन सबके वर्कर हमारे साथ हो गए पहले से ही कुछ कामरेड कम्युनिस्ट वहां काम करते थे, इन्हीं होटलों में। अंडरग्राउंड पार्टी तो होती थी। क्वालिटी में जुगल किशोर शर्मा होते थे जो हमारी यूनियन के फाउन्डर भी थे। होटल वर्कर यूनियन में split आया। 19645 में 66 में।

Q. : एटक जब split हुआ तो हमारी यूनियन में भी बंटवारा हो गया और विजय सिंह जो रहता था, 1955 में होल टाइमर वो सीपीएम में चला गया और जब मैं हास्टपीटल में रहा बीमार रहा इस पीरियड़ में उसने हमारे बहुत से वर्किंग कमेटी के मेम्बर को नौकरी से निकलवा दिया था और वर्किंग कमेटी ने अपनी मेजारिटी बना डाली तो एक्स. डी. शर्मा और हम सब ने तो 15 हमारही तरफ थे और 16 हमारी तरफ थे तो 16 आदमियों ने 15 आदमियों को exploite किया तो हमने उसी रात जिस हजारों मजदूरों को बुला करके होटल मजदूर यूनियन के का ऐलान कर दिया और 167 पंचकुइया रोड़ पर अपना दफ्तर बना लिया। सारे वर्कर मेरी तरफ convert होकर आ गए। split में खाली uniset गया उनके साथ मजदूर नहीं गया। होटल इंडस्ट्री हमारे साथ थी क्योंकि मैं तो उसमें बुनियादी तौर पर गुरू से रहा हूं सारे वर्कर मेरे साथ थे।

Q. : उस वक्त तक आप किस पोस्ट पर आ गए थे?

Ans : जनरल सेक्रेटरी होटल वर्कर्स यूनियन। मैं सैक्रेटरी 1951 से रहा।

Q. : 1951 में आप किसी होटल में काम कर रहे थे?

Ans : 51 में में गेरोल्ड ग्रुप में था।

Q. : जेल में आपको गया क्या था। 3 महीने आप जेल में रहे। 400-500 लोग सब, तो इनको कैसे निकाला गया?

Ans : बाबा शिवचरण सिंह जो वकील थे इन्होंने अपील करके हमको सेशन से हमें बरी कराया। बाबा शिवचरण पहले पार्टी के वकील थे अब सी पी एम में चले गए। पार्टी की तरफ से इनकी ड्यूटी थी, ये

हमारे लिए जेल में बीड़ी, सिगरेट, गुड, चना सब कुछ ले जाते थे कैंप जेल दिल्ली गेट में। आजकल वो मौलाना आजाद का होस्टल बन गया है, उसका भी दो हिस्सा था एक मेन जेल था एक कैंप जेल था। कैंप जेल मं हम जैसे लोगों को रखा गया था और सीरियस केस वालों को वहां रखा जाता था।

गेरोल्ड में मेरी नौकरी चली 1957 तक और 57 तक गेरोल्ड ने मीरा बेली बेच दिया, तो हमारी सर्विस कनॉट प्लेस में आ गई। क्वालिटी रेस्टोरेंट में मुझे उन्होंने डयूटी दे दी, लेकिन एक शर्त लगा दी कि डयूटी वर्दी या यूनियन दोनों में से एक चुन लो या तो वर्दी पहनकर डयूटी करो और यूनियन छोड़ दो। हमने वर्दी वापस किया और होल टाइम यूनियन में आ गए क्योंकि हमारा काम भी बढ़ गया था अशोका होटल का भी सारा हमने संभाल लिया था। बीमारी के बाद आकर के फिर वहीं डयूटी लग गई थी। 1956 में अशोका में मैं यूनियन बना चुका था। 1957 में बीमारी से वापिस आकर अशोका में गया तो वर्दी उनको दे दिया था वापस।

Q. : होटल वर्कर्स यूनियन का उस टाइम में कितना मेम्बरशिप था?

Ans : उस समय में एक ही यूनियन थी पूरी दिल्ली की। होटल, मैस, कैंटीन, कैफे सब इसी में थे। इसमें हमने कैटरिंग, रेलवे कैटरिंग भी मेरे पास था। मैं उस वक्त जनरल सेक्रेटरी था। सारी दिल्ली के कैंटीन में जो गवरमैंट ऑफिस में थी जो यूनियन वो भी हमारे इसी पार्टी के मेम्बर थे। रिजर्व बैंक तक और मैस जितने थे। सेन्ट्रल विस्टा मैस विक्टोरिया मैस, किंग एडवर्ड मैस और जोधपुर मैस। ये मैसे सिर्फ मिलिटरी आफिर्सस के लिए था, इनमें ठेकेदार होते थे, ठेकेदार के इम्पलाईज होते थे। तो मैंने भी इसमें काम किया जब मैं बेकारी में रहा। कीमिया वैस मैस में खेमराज था। ठेकेदार मैं उसके नीचे रहा। सेन्टर विस्टा मैस में हमारे पार्टी मेम्बर होते थे जहां हमारे लीडर भी अंडरग्राउंड जाते थे, आते थे जो अब इन्द्रा गांधी कल्चर सेन्टर बन गया है वहां पर सेन्टर विस्टा मैस था और जहां पर निर्माण भवन है वहां पर किंग एडवर्ड मैस था। इस तरीके से पुरी दिल्ली की कैटरिंग इन्डस्ट्री में करोडों वर्कर हैं और मैं जनरल सेक्रेटरी। सब जगह हमने expand कर दिया। एक ईश्वर दास वल्लभ दास ठेकेदार होता था रेलवे का वो सब मजदूर यूनियनों का मेंबर था। तो उस वक्त काम फैलाया मैंने इस पीरियड में expand किया।

Q. : आप जनरल सैक्रेटरी बने 1951 में और कब तक आप जनरल सैक्रेटरी रहे?

Ans : 1951 से 1966 तक उसके बाद हमने मजदूर यूनियन बनाया तो फिर यादगार, दूसरे होल टाइमर ले आए तो हमने सुरेन्द्र बाली दूसरी इंडस्ट्री से लाए और पब्लिक सैक्टर का मैंने संभाल लिया और प्राइवेट सैक्टर सुरेन्द्र बाली के हवाले कर दिया, तब से युनियन में हम दोनों की बराबर लीडरशिप चलती रही और अब भी चलती है। होटल वर्कर्स यूनियन सी पी एम के हाथों में चला गया था और वो सिर्फ फतेहपुरी में संकुचित होकर रह गया था। कनॉट प्लेस के कुछ ढ़ाबे उसके पास थे अब तो इक्के-दुक्के रेस्टोरेंट में उसके मेम्बर हैं उनकी मेजोरिटी खत्म हो गई। मेजोरिटी तो हमारे पास है पब्लिक सैक्टर, प्राइवेट सैक्टर, एटक दिल्ली में और दिल्ली के बाहर यूनियन जयपुर में है सिर्फ एटक की है और किसी की तो है ही नहीं। बंबई

में है वहां पर इंटक भी है हमारी भी है। डिवीजन है वहां पर बाकी साऊथ में है बहुत से शहरों में हमारी युनियनें हैं और आगरे में है। होटल वर्कर यूनियन हमारी एटक की, वो अलग तो हैं फिर इन सबको मिलाकर हमने ऑल इंडिया की फेडरेशन बनाई थी 1973 में, वो अभी भी है। ऑल इंडिया होटल वर्कर्स फेडरेशन जिसका मैं जनरल सेक्रेटरी बना, तब से अब तक मैं हूं।

Q. : ये जो आपने बताया कि दूसरे राज्यों में भी आपकी यूनियन है ये कैसे हुआ क्योंकि पहले तो सिर्फ दिल्ली में थी?

Ans : उसके बाद क्या होता था कि कभी एटक का सैशन हो तो वहां पर सारी इंडस्ट्री वाइज़ मीटिंग हुआ करती थी। हमने भी अपने होटल वर्कर की जो लीडरशिप थी उसको मिलाकर हमने फैसला लिया कि ऑल इंडिया की भी बनानी चाहिए और उसके मुताबिक हमने एटक की गाइडलाइन से हमने ऑल इंडिया फेडरेशन बनाया। पहले कान्फ्रेंस को होस्ट किया अशोका होटल इम्पलाईज यूनियन और मैं इस यूनियन का भी जनरल सेक्रेटरी था। इस फेडरेशन का पहला काम था अशोका होटल इम्पलाईज यूनियन और मैं इस यूनियन का भी जनरल सेक्रेटरी था, इस फेडरेशन का पहला काम था अशोका होटल को होस्ट करना। इसके बाद कई जगह हुआ अलग-अलग शहरों में और वहां भी सब कुछ है Union exist leadership और चंडीगढ़ में भी है। चंडीगढ़ में से हमारे कामरेड गंभीर वहां फेडरेशन में है, आगरे से कामरेड हफीज खान थे और जयपुर से कामरेड शाह जी थे, बाम्बे से कामरेड उपाध्याय होते थे इसी तरह साउथ से कामरेड होते थे, हैदराबाद से। ऑल इंडिया से हमारे इस फेडरेशन में लीडर हैं और जब भी एटक वर्कर आपस में मिलते हैं तो कहते हैं कि कोई कान्फ्रेंस बुलाओ कोई तैयार हो तो हो नहीं तो हमें ही करना पड़ेगा दिल्ली में।

Q. : 1948 में जब आप पार्टी के मेम्बर बने तो वो आपको पार्टी मेम्बरशिप कैसे मिली?

Ans : पार्टी मेम्बरशिप का पीरियड ये था कि 18 साल से नीचे कोई मेंबर बन नहीं सकते थे तो वहां की जो ब्रांच थी सैल उसने कहा कि अब तुम पार्टी मेम्बर बनो, उसके बाद फार्म भरवा लिया तब से मैं मेंबर बन गया।

Q. : 48-51 के बीच का जो पीरियड था ये कैसा था इसमें आपने काफी स्ट्रगल किया, आपको पार्टी के अंदर भी परेशानियां रही। एक तरफ से आप पार्टी में आ भी गए थे और दूसरी तरफ काफी स्ट्रगल भी करना पड़ रहा था।

Ans : वो स्ट्रगल चल रहा था क्योंकि हमारे यहां जो होटल वर्कर में पार्टी के जो लीडर थे वो पड़े लिखो के खिलाफ लीडर शर्मा जी जो थे वो और कामरेड विजय शर्मा, संतोष चटर्जी थे सब कहते थे कि वो बुद्धिजीवी होते है ये मौका परस्त होते हैं इसलिए वर्किंग क्लास को लीडरशिप पर रखना चाहिए। हम लोग तो नए -नए थे उन्हीं को अपना नेता मानते थे तो उसी हिसाब से चलते थे और पार्टी में उसी हिसाब से इलेक्शन हो गया और जब एक्स. डी. शर्मा आए तब उन्होंने समझाया कि तुम लोग गलत हो, हम लोगों ने गलती मानी।

Q. : वो जो पीरियड़ था 1948-51 के बीच का बहुत crises का पीरियड़ था और उस समय बहुत से नारे थे। आप बताइये इसके बारे में ?

Ans : हां उस समय कई नारे थे 'ये आजादी झूठी है' और 'अमन के दुश्मन कौन है ट्रमन, इटली, नेहरू उनके साथ जुड़ते थे जो पार्टी की लाइन थी हम तो वहीं नारे लगाते थे वहीं नारे रात को जाकर लिखकर चिपकाते थे। पुलिस उन्हें दीवार से उखाड़कर ले जाती थी क्योंकि पार्टी पर बैन था।

Q. : उस वक्त 1949 में रेलवे स्ट्राइक भी हुई थी तो उस वक्त ये भी नारा था, आन्ध्र रेवोल्युशन तो इसके बारे में बताइये ?

Ans : आंध्र रेवोल्युशन का मामला इधर का तो नहीं था पर साउथ में तो और रेवोल्युशन का नारा था तिलंगना और दुसरी जगहों पर। वहां के रोजगारों के खिलाफ हथियार तो उठा लिया था तिलंगाना का मुवमेंट तो हो चुका था पर लीडरशिप के अंदर इसमें काफी मतभेद थे और 1950 में कामरेड डांगे ने फिर बातचीत करके पार्टी पर से बैन हटवा दिया। पार्टी ने बहुमत तो शुरू से दिया डांगे का एक अलग विचार शुरू से रहा और जो दूसरे ग्रुप थे उसका भी एक अलग विचार रहा। पार्टी में दो विचार होना कोई बुरी बात तो नहीं है लेकिन मेजोरिटी से इसे discuss करना चाहिए, जैसे बिटया की लाइन को हमने माना कि गलती तो थी क्योंकि मेजारिटी पार्टी गर्वनमेंट इसका निर्णय था। 1948 कांग्रेस तो इसी तरह उनको भी पार्टी कांग्रेस के फैसले को मानना पड़ेगा वो पार्टी तोड़कर चले गए 1964 में लेकिन जब वहां इलेक्शन लड़ने लगे तो वहां भी उनमें फूट पड़ गई। वो बोले वहां फूट डालकर आप आम इलेक्शन में और यहां चुनाव लड़कर मिनिस्टर बन गए ज्योति बसु यहां थी उनमें फूट पड़ गई उनके 14 टुकड़े हो गए। ऐसे जाएंगे तो गलत जगह ही पहुंचेंगे सही जगह कैसे पहुंचेंगे। Street of the communist movement was the big muslim आज थी इसका loss है हिन्दुस्तान में वर्किंग उछलकर का मुवमेंट 50 साल पीछे चला गया क्योंकि हिन्दुस्तानी सरमायदारों का 50 साल की जिन्दगी और ज्यादा मिल गई कि आपने एटक तोड़ा, पार्टी तोड़ा, यूथ तोड़ा, पूंजीपति वर्ग के हित में तोड़ा किसको फायदा होगा इसका हिन्दुस्तान के बुर्जुआ वर्ग को और आज थी वो लैफ्ट मानते नहीं लैफ्ट फ्रंट नहीं बनाते। बिहार में हमारे ज्यादा थे इन्होंने लैफ्ट फ्रंट बनाने से इंकार किया बल्कि जगह पर हम लैफ्ट फ्रंट बनाना चाहते हैं इलेक्शन लड़ने के लिए नहीं बनाना चाहते। हम जब इलेक्शन में खड़े हुए इन्होंने जनता दल का साथ दिया हमारा साथ नहीं दिया। आज वो लालू के साथ है कहीं वो मुलायम के साथ है कहीं वो बंसी जी के साथ हो जाते हैं इनका तो कोई हिसाब -किताब है नहीं जहां सीपीआई को डिच करना हो वहीं वो किसी के साथ हो जाते हैं पार्टी हमारी तरफ से कोशिश कर रही है देखते हैं क्या होता है वहां तक कामयाबी मिलती है।

Q. : मैं आपसे पूछना चाहता था कि जो split होता है इसका आपने बताया कि वर्किंग क्लास को इसका नेगेटिव इम्पैक्ट था और बुजुर्आ जी के लिए बहुत फायदेमंद था ये जब हुआ तो आप होटल वर्कस यूनियन के जनरल सेक्रेटरी थे बाद में होटल मजदूर यूनियन खोलना पड़ा इसका क्या इम्पैक्ट हुआ ?

Ans : क्योंकि ये लाइन गलत थी इसलिए मजदूर तो गए नहीं उनके साथ सिर्फ चंद पार्टी लीडर गए। मैसेस नहीं गए वो हमारे ही रहे आज भी हैं होटल इंडस्ट्री उनके साथ नहीं है क्योंकि वो गलत हैं।

Q. : जिस वर्कर यूनियन में आप थे उन्होंने क्या आपको वहां से expelt कर दिया?

Ans : वर्किंग कमेटी में उन्होंने अपना सोलह बना दिया हमारे पन्द्रह रह गए। हमारे लोगों को नौकरी से निकलवा दिया।

Q. : कौन सी यूनियन थी?

Ans : टी. हाउस होता था कामरेड रेडी होते थे एक एम्बेसडर होता था उसमें कामरेड मानसिंह थे, इनकी नौकरी छुडवा दी मालिकों ने मिलकर। एक रामसिंह था उसकी भी नौकरी छुड़वा दी इनकी जगह तीन आदमी अपने ले आए, मैजोरिटी बनाने के लिए।

Q. : कौन थे लीडर आपके?

Ans : डी.डी. सिंह उनका स्वर्गवास हो गया। उनको हम पहले होटल वर्कर में होल टाइमर लाए थे 1955 में क्योंकि हमारे लीडर स्ट्राइक करना चाहते थे पावर की कमी थी तो एक पड़ा लिखा आदमी होना जरूरी था दफ्तर में, तो उस वक्त उसको लाए थे पर अंदरूनी रूपसे वो कुछ और अपनी मैजोरिटी बनाता रहा अंधेरे मेंरखा पर इसका उसे कुछ बेनिफिट नहीं मिला वो 15 आदमी से 16 तो बना गया लेकिन जो मैसेज थे वो 15 के साथ थे कुल मैसेस उनके साथ था। पब्लिक सेक्टर, प्राइवेट सेक्टर सब उनके साथ था।

Q. : होटल वर्कर यूनियन के सारे यूनिटस आपके पास वापस आ गए आपके नए यूनियन में। होटल वर्कर यूनियन का क्या हुआ?

Ans : वो उन्हीं के पास है दफ्तर उन्हीं के पास है पावरमेंशन आसफ अली रोड़ पर, और फतेहपुरी पर दो चार यूनिट है, ढाबे हैं जो फुटपाथ पर चलते हैं वो उनके मेंबर है उन्हें हमने हाथ भी नहीं लगाया। इंडस्ट्री सेटलमैंट हम अकेले साइन करते यदि वो नहीं होते, उन्होंने एक बार अलग साइन किया कुछ यूनिटों पर डी. ए. का इतना फर्क निकला कि 80 रूपये कम निकले सारे वर्कर उन्हें छोड़कर हमारे पास आ गए। एटक में सन् 1964 में क्योंकि हमारे पास उन्हें 80 रूपये का बेनिफिट मिल रहा था। 1964-1984 तक हमारे पास रहे।

Q. : सीपीएम का बेस बहुत बड़ा होना?

Ans : नहीं, होटल इंडस्ट्री में इसका बेस इतना बड़ा नहीं है। आल ओवर इंडिया में भी नहीं है, केरला में है उनका एक बंगाल में है बाकी जगह सब एटक का ही है। यू.पी. में आन्ध्र प्रदेश में तमिलनाडु, राजस्थान, महाराष्ट्र में बल्कि सभी जगह एटक के हैं। फेडरेशन भी एटक की ही है। अशोका होटल, ऑल इंडिया मजदूर इम्पलाइज यूनियन ये सब डारेक्ट एटक से संबंधित है। Federation is a organisation for puspoe of all india struggle on the common issues of the hotel workers if necessary otherwise general guideline is a AITUC! Whenever there is AITUC session we

used so meet all the industrial workers and discuss their problems for all india confe they announce their it self.

What about other I am talking about other union like B.M.F. there is any base units?

There have some base in public sectors not in private sector in private sector they have a union multinational companies like. I.T.C. Indian formed their own unon that in management Obrai has formed, their own union that is management. The same is in Tata they formed their own union that is in management. That is not political organisation but generally they inteeract and B.M.S. they petronisation they don't petronise us they petronise only those unions हम तो जाएंगे तो सीधा क्लास स्ट्रगल वाली बात हो जाएगी तो ये है कि यदि बनेगा तो हमारा बनेगा।

Q. : तो उसमें भी वर्कर उनके साथ नहीं हैं?

Ans : नहीं जबरदस्ती है। मिसाल के तौर पर ताज के वर्कर मुझसे मिलने आए Ashoka Hotel esa to have some committee and cordinationwhen they went back to wthe duty on time office their tranination order work so after that nobody has dare to come me and why should they come I.P.C. में मोरिया होटल में हमने 1982 में लंबी स्ट्राइक की बहुत बड़ी लड़ाई की और अल्टीमेटली मालिकों ने इनसे कहा हम सारी मांगे पूरी करा देंगे जिद छोड़ दो। वर्कर जो एक महीने ही हड़ताल पर बैठे थे बोले चलो जो फैसला कराना है करा दो। जितना बड़ा लीडर था उसे निकलवा दिया पूरा यूनियन खत्म और जो इंटरनल यूनियन बना वो मैंनेजमेंट से मिल गया। इसी तरह हर बड़े होटल का मालिक यही चाहता था मैरेडियन भी तथा होटल इंपीरियल ने भी यही किया। होटल इंपीरियल जो शुरू से हमारा देश रहा है वो हमारी लीडरशिप की गलती से नहीं होता था।

Q. प्राइवेट होटल है जैसे ताज, हयात रिजेंसी आपने बताया कि इसके वर्कर आपसे मिलने आए तथा इनका टर्मिनेट हो जाता यही नहीं, हम लोगों के नाम पर Inaduance उन्होंने अपने हाटलों में Invention order ले रखा है। I cannot inter their permission like Obrai. एक बार मेरे बड़े भाई आए उन्होंने कहा कि ओबराय होटल दिखा दो तो मैं उनसे कैसे कहता कि मेरी entry वहां बैन है मै।ने वहां के जी.एम. को फोन किया या, हमारे बड़े भाई आए हैं आपका होटल देखना चाहते हैं उन्होंने कहा कि आपके बड़े भाई आए हैं आपका होटल देखना चाहते हैं उन्होंने कहा कि आपके बड़े भाई का स्वागत होगा उन्हें टैक्सी में भेज दीजिए होटल दिखा कर हम वापस टैक्सी में ही भेज देंगे लेकिन आप मत आइएगा।

Ans : मैंने वहां जब 1965 में हड़ताल की ऑबराय में हमारे पहली स्ट्राइक की थी। 1965 में जब ये होटल बना था ऑबराय हर एक वर्कर insduance resignation letter का लेकर रखता और शुरू में साइन करा लेता है बिना डेट के।

Q. : ये अभी भी चल रहा है क्या?

Ans : चल रहा है कई cases में अभी भी । 1965 में हमने जो हड़ताल की इसके खिलाफ इसमें सबका त्यागपत्र स्वीकार कर लिया। हमने कहा कि हमने तो त्यागपत्र दिया नहीं हम हड़ताल करके धरना देने बैठ गए इसी बीच हिंदुस्तान-पाकिस्तान की लड़ाई शुरू हो गई एमरजेंसी लग गई उन्होंने कहा ये सब हटाओ हमने कहा हमें वापस रख लो। पुलिस ने इस बीच समझौता कराया कहा कि आधे लोगों को रख लो आधे को वापस भेज दो। इस बीच मालिक ने अंडर यूनियन बना ली। अंडरयूनियन के जो लीडर थे वो हमारे आदमी थे जब उनको पता लगा कि लाल झंडे वाले अंडरलीडर बन गए है किसी को काठमांडु ट्रांसफर किया किसी को तंजानिया किया और वहां ले जाकर डिसमिस कर दिया और अपने नये चमचे बना लिये।

Q. : ये जो प्राइवेट होटल के वर्कर हैं इनकी वर्किंग कंडीशन बहुत खराब होती होगी?

Ans : इनकी कंडीशन ये है कि ये इकट्ठा करता है और वहीं उनको तनख्वाह बढ़ा कर देता है। अपनी जेब से कुछ नहीं देता। बेसिक पे, minimum pay दिखानी तो पड़ती है लेकिन जब बढ़ाने की बात आती है तो वो ही बढ़ा कर दे देता है। कोई इसके खिलाफ बोल नहीं सकता बोलेगा तो जाएगा। इनमें बहुत बुरी हालत हैं यहां कोई जॉब सिक्योरिटी नहीं जब चाहे निकाल दिया। ठेकेदार के आदमी रख लेते हैं। एक आदमी को ठेकेदार बना देते हैं वो जैसे अपने 20 आदमी भेजता है उनके मालिक ठेकेदार है उनको तनख्वाह ठेकेदार के द्वारा ही मिलेगी और जब चाहे वो ही उन्हें निकालेगा इस तरह का सिस्टम पूरी इंडस्ट्री में आ गया। ये जो नई सरकार बी.जे.पी आई है। मैनेजमेंट को कुछ अधिकार देने जा रही है। एक तरह का slavery system आ गया पूरी इंडस्ट्री में पहले जैसे आदमी, आदमी को बेचता था वैसे ही हो रहा है। एक आदमी मालिक को 20 आदमी बेचता है यही हो रहा है यही slavery system आ गया है। ठेकेदार के द्वारा बहजुत कम पेय दी जाती है। मालिक से तो ठेकेदार पूरी रकम लेता है लेकिन मजदूर को कम देता हैं कई पर दस्तखत पूरा लेता है जैसे मिनिमम बेस दिल्ली में जो कि गवर्नमेंट नोटिफिकेशन हुआ है उसमें मुताबिक पूरी इंडस्ट्री के लिए 2,4000 कुछ जयादा है जो ठेकेदार लेता है वो हर एक के नाम पर मालिक से पूरा पैसा ले लेता है और मजदूर को कम देता है मालिक से ठेकेदारी का कमीशन अलग से लेता है और तनख्वाह भी अलग से लेता था। वर्दी के पैसे, जूतों के पैसे मजदूर से लेता था कोई छुट्टी नहीं है, कोई बेनिफिट नहीं है, ईएसआई के पैसे भी काटकर अपने पास ही रख लेता है। प्रोविडेंट फंड के पैसे भी खा जाता था अपने एकाउंट में डाल लेता था न कि मजदूर के। ये सब चलता रहता है ये पीरियड बहुत की tough।

Q. : ये कबसे शुरू हुआ?

Ans. जबसे नरसिम्हा राव का निजिम शुरू हुआ तबसे ये तेज हो गया।

Q. : आपको उस समय क्या चेंज लगा ?

Ans. हमने दो बातें देखी एक तो काफ्ट ऑफिशियल स्कूल को ज्यादा स्पोट दिया गया। वर्कर को प्रवोक करने की कोशिश की गई और वर्कर के Trams and Condition of Service को ठेकेदारी सिस्टम लागू करके उनके अधिकार छीनने की कोशिश की गई और जो ठेकेदारी के द्वारा लोग लगे हैं उन पर हमारा कोई सेटलमेंट लागू नहीं होता वो कहते हैं ये ठेकेदार के इम्पलाई है हमारे है ही नहीं और इसलिए जो लीगल उनका बेनिफिट बनता है। ईएसआई वगैरह वो सब ठेकेदारी है और ठेकेदार का तो address registered ही नहीं है वो तो तनख्वाह लेते ही भाग जाते हैं फिर उन्हें मालिक से दिलवाना पड़ता है ये सिस्टम बहुत चल गया है और इसे बढ़ावा दिया जा रहा है नरसिम्हा राव के काल से ही और अब तो मालिक कहते हैं कि राज हमारा ही है तुम्हारा राज खत्म है तुम्हारे सारे अधिकार खत्म अब तो जब हम चाहेंगे तब निकाल देंगे। जैसे हम चाहेंगे वैसे ही करेंगे और अब तो यूनियन बनाना भी आसान नहीं है ये अमैंनमेंट करने जा रहे हैं कि जहां एक हजार मजदूर काम कर रहे हैं कम से कम 30 प्रतिशत के दस्तखत होने चाहिए उसके मैम्बर बनने के लिए तब वो रजिस्टर्ड करा सकता है लेकिन अब 30 प्रतिशत totla strength of that industry has to signed trade union rights, मैलिक अधिकारों को खत्म किया जा रहा है और ये सब बी जे पी ही कर रही है क्योंकि जो बी जे पी का चरित्र है वो पैसा ही है जैसे व्यपारी वर्ग टोटल एंट्री वर्कर का है।

Q. : बी.एम.एस के जो कुछ यूनियन है आपने कई स्ट्रगल का जिक्र किया है दिल्ली में भी इनकी कुछ यूनियन है ?

Ans : ये सब हमारे साथ जाते हैं नाम तो इनका अब जगह है सब जगह इन्होंने भरा हुआ है घर बैठ कर भारत लिख देते हैं सारा होटल इंडस्ट्री हमारा मेम्बर है, सारे दुकान कर्मचारी हमारे मेंबर हैं अपना एकाउंट बना लिया, सबके बना लिया तभी नम्बर एक बन गए, होटल मेम्बरशिप शो करके। दरअसल मेम्बरशिप हमारी इंडस्ट्री में उनकी कुछ नहीं है जो आर.एस.एस के काडर हैं वही उसके मेम्बर हैं और कोई नहीं और वो भी जब हम स्ट्रगल का नाम देते है तो साथ आ जाता है और अपना नाम देते हैं कि हम भी हैं क्योंकि उनका बेस तो कोई है नहीं लेकिन आर.एस.एस. के कारण तो उनका कमीशन है वो भी गाली देगा।

Q. : आर.एस.एस. के मेम्बर होंगे आपकी होटल इंडस्ट्री में ?

Ans : जो आर.एस. का कैडर आया है वो बी.एम.एस के साथ है वो इसके through कुछ नहीं करते वो तो घर बैठकर लिस्ट बना लेते हैं मालिक से कि कितने मुलाजिम हैं सबको मेम्बरशिप कार्ड दिया आमदनी show कर दिया खर्चा show कर दिया और सरकार को दे दिया कि ये हमारे मेम्बर हैं कोई वेरिफिकेशन नहीं कुछ नहीं पर हमारा तो वेरिफिकेशन होता है। इसी तरह इंटक कर तो रही है पहले वहीं अब बी.एम.

एस कर रही है। इस तरह नम्बर वो चलाती है अब ये पॉवर में है तो ये चलती है बिना वेरिफिकेशन के अपनी मेम्बरशिप का बढ़ा कर show करते हैं।

Q. : 1951 में आप होटल वर्कर यूनियन के जनरल सेक्रेटरी बने उसके बाद होटल इम्पीरियल में 1955 में स्ट्राइक चली तो उसके बारे में कुछ बताइये। होटल इम्पीरियल, मेडन्स स्विस इनकी स्ट्राइक के मुद्दे क्या थे?

Ans : मुद्दा यह था कि पहले से ही हमारी यूनियन थी पर इनमें नहीं थी यूनिसेफ में नहीं थी कैडर था वहां के मैनेजमेंट का डर के मारे वही आता था एक किशोरीलाल नाम का वर्कर था उसे एक अंग्रेज हाउस कीपर थी मिस बैसाख उसने उसको ब्लडी ब्लैक इंडियन गेट आउट कह दिया था और वो आ गया मेरे पास ये 55 की बात है, आकर उसने एस इट इज मुझे रिपोर्ट दे दी और मैंने वैसे के वैसे पोस्टर बनाकर तमाम दिल्ली में लगा दिया कि एक अंग्रेज लेडी की आज भी यह हालत है कि वो एक इंडियन को ऐसे बोले। हमने सारी दिल्ली के होटल वर्कर बुलाए और इम्पीरियल होटल को चारों तरफ से घेर लिया तो वहां के वर्करों को लगा कि वाह हमारे स्पोट में इतने मजदूर आ गए और उसके बाद वहां का जो वर्कर था उसके साथ हमार सीधा संपर्क था। हमने यूनियन बनाई तो आबरॉय ने हमारे 80 लीडरों को सस्पैंड कर दिया। सस्पैंड कर दिया तो हमने उसके खिलाफ हड़ताल कर दी। पहले इम्पीरियल होटल आबरॉय ने किराये पर ले रखा था। सरदार रंजीत सिंह पर केस चल रहा था वो हार गया तो उसने इम्पीरियल आबरॉय के हवाले कर दिया।

उस वक्त 1955 में जब हमने हड़ताल करी तो हमारे पास जो किचन वर्कर था वो सब बंग्लादेशी था। उन सबके वीजा था और सबका वीजा मालिक के पास था। मालिक ने उन सबका वीजा खत्म कर दिया था तो एक कामरेड वी.पी. नायर होते थे एम.पी. केरला से उनको लेकर हम फिरोज़ गांधी के पास गए वो राजीव गांधी के बाप थे और फिरोज़ गांधी को लेकर के प. जवाहर लाल नेहरू के पास गए और आबरॉय के खिलु हमने सारी कहानी बता दी। प. जवाहर लाल नेहरू, ने बतौर होम सेक्रेटरी से उनको फोन किया कि आबरॉय के यहां जितने लोगों का वीज़ा है किसी का वीज़ा कैंसिल नहीं होगा तब तक जब तक आबरॉय के मालिकों और मजदूरों का झगड़ा खत्म नहीं होता। ये वीज़ा restore होते ही लोगों का जोश बढ़ गया और फिर सारी दिल्ली से चंदा आने लगा हमने गेट पर ही लंगर खोल ली। सारे दिल्ली से वर्कर शाम को इकट्ठा होकर आते थे, नारे लगाते थे और वहां खाना खाते थे, फ्री लंगर था। मटन वाला, मटन डाल जाता था, सब्जी वाला, सब्जी, राशन वाला राशन डाल जाता था और बनाने वाले वर्कर तो थे ही। मजा आ गया था 10 दिन तक हमने रौनक कर दी थी और सरकार हमारे साथ हो गई थी क्योंकि नेहरू जी ने हमारा समर्थन किया और जब नेहरू जी ने हमारा समर्थन किया तो पुलिस ने हाथ खींच लिया। हड़ताल तोड़ने के लिए वो लोग आदमी लाते थे तो हम गाड़ी की गाड़ी उलट कर फेंक देते थे, हम उन्हें मार-मार कर फेंक देते थे और पुलिस हमारी मदद करती थी।

Q. : ये जो प्राइवेट होटल हैं जिसका आपने कुछ देर पहले जिक्र किया जैसे इम्पीरियल में उस जमाने में आप यूनियन बना सकते थे लेकिन आज वहां का वर्कर जो है उसको इतना अधिकार नहीं है कि वो यूनियन बना सके और जो यूनियन बनती है वो वहां की मैनेजमेंट ही बना सकती है।

Ans : इम्पीरियल की पोजिशन ये नहीं है। इम्पीरियल में जो कुछ भी हुआ है वो हमारी गलती की वजह से हुआ है। इम्पीरियल शुरू से हमारा बेस रहा है और हमारे हमदर्दी की मेजारिटी आज भी है लेकिन हमारी यूनियन की लीडरशिप के अंदर जो हमारा जनरल सेक्रेटरी था वो इम्पीरियल में ही था कामरेड कैलाश पासवान उसके मरने के बाद जो दूसरे लोग आ रहे हैं वो अभी इम्पीरियल को अच्छी तरह समझ नहीं पाए है। मैस को मैनेजमेंट ने कहा कि आप आकर इनकी डिमान्डस पर समझौता करो। मैंने सेन्ट्रल लीडरशिप है वहां पर उनके प्रेज़िडेंट जनरल से कहा कि आप जाकर समझौता करा वो बोले कि आपसे मैनेजमेंट बात क्यों करती है हमको सीधे लिखकर भेजे ये एप्रोच तुम्हारी गलत है तो वो गए नहीं और मजदूरों को गुस्सा आ गया 14 प्रतिशत बढ़कार देगा, मैनेजमेंट ने लोकल कमेटी बनाई और सबसे दस्तखत ले लिये और मजदूरों को 14 प्रतिशत बढ़कार ये लोग नहीं गए। ये तो हमारी गलती है न अगर ये चाहते तो समझौता हो जाता और इसका मैनेजमेंट ने फायदा उठाया, लेकिन आज भी वहां पर वर्कर हमारे साथ है, वहां मेम्बरशिप भी है, चंदा भी आता है, वहां के लोग भी आते जाते हैं पर इम्पीरियल की अब अलग पोजीशन है सिर्फ हमारी गलती की वजह से।

1955 में जब आबरॉय में हड़ताल हुई थी तब में पं. नेहरू से मिलने गया था। नेहरू जी आबरॉय से नाराज़ थे क्योंकि उसने प. जी को बहुत तंग किया था, वो बहुत ऑवर चार्ज करता था क्योंकि उसके पास होटल की मोनोपोली थी ओर कोई होटल था नहीं उस समय दिल्ली में, इसलिए उन्होंने उस लड़ाई में वर्कर्स का साथ दिया। फिरोज गांधी हमारे साथ थे और फिरोज गांधी उनके दामाद थे। फिरोज गांधी जर्नलिस्ट थे और वो न्यूज करोनिकल प्रेस चलाते थे। न्यूज क्रोनिकल एक अखबार निकालता था दिल्ली में, पर अब तो वो बंद हो गया। फिरोज गांधी उस अखबार के मालिक थे और वो एम.पी. भी थे। देवी जी वैसे भी बहुत अच्छे आदमी थे वो हमने उनको एक बार और देखा। 1960 में नेहरू पार्ट में करीब 7 हजार झुग्गियां थी तो सरकार ने हुक्म दिा कि इनको हटा देना चाहिए। पुलिस आई और सब कुछ तोड़ने लगी मैं वहीं दफ्तर में बैठता था तो मैंने पुलिस से कहा कि ये क्या कर रहे हो, उन्होंने मेरे साथ भी धक्का-मुक्की करी। उसके बाद सारे झुग्गी वालों को रात को इकट्ठा कियाऔर हम प. जी के पास ले गए। प. जी ने यहां उस दिन हैरी ब्लैक, बर्ल्ड बैंक का चेयरमैन आया हुआ था। हमें पता नहीं था और हम बाहर 12 बजे तक हाय-हाय करते रहे। रात को खबर आई कि सुबह 8 बजे आकर मिलिए प. जी से, तो हम सुबह 8 बजे आ गए। उसी साल शास्त्री जी ने रेलवे मिनिस्टरी से अपना इस्तीफा दिया था कोई एक्सीडेंट हो गया था। शास्त्री जी दरवाजे से गुजरे तो पहले तो शास्त्री पर बरस पड़े कि तू इनके साथ आया है बोले नहीं-नहीं मैं अलग आया हूं। फिर उसके बाद वो आए बोले तुममें से गोप कौन हैख मैं एक कदम आगे हो गया । तू उल्लू का पट्ठा, हरामजादा, रात को

क्या हो गया था जो हाय-हाय कर रहे थे और थप्पड़ मार दिया, मैं तो घबरा गया। सिक्योरिटी वाले चारों रतफ से तने हुए, सारे में पुलिस थी उनकी। 2 मिनट बाद उनका गुस्सा ठंडा हो गया। फिर हमारी जान में जान आई। फिर हमने कहा कि साहब ये मजदूर लोग, गरीब लोग वहां रहते हैं। मैने सारी कहानी बताई तो वो बोले कि इनको नोटिस क्यों नहीं दिया। हम बोले कोई नोटिस नहीं दिया। फिर उन्होंने एन.डी.ए., एन.ओ. एम.सी, डी.ओ.ए. वाले सब को लिख कर दिया कि कोई झुग्गी वाला तब तक नहीं हटाया जाएगा जब तक वैकल्पिक इंतजाम न हो जाए। तब तक वहां बिजली, पानी, सफाई व्यवस्था सब कुछ होगा। उन्हें इतनी हमदर्दी थी, गरीबों से लगाव था। हम नारे लगाते थे गेट मीटिंग में तो फोन जाता था जनरल मैनेजर को ये क्यों शोर हो रहा है इनकी क्या समस्या हैं जनरल मैनेजर घबरा जाता था कि भई गेट मीटिंग मत करना, प. जी को फोन आ जाता है, नजदीक ही रहते थे, त्रिमुर्ति भवन में। तो जसे ही हमने गेट मीटिंग का नोटिस लगाया वैसे ही सारी डिमांड मान लेता था जनरल मैनेजर।

उस समय आबरॉय में जब झगड़ा हुआ उसका हमें फायदा मिला, नेताओं का फायदा मिला।

Q. : इस हड़ताल का रिज़ल्ट क्या निकला?

Ans : इस हड़ताल में जब कामरेड वाई.डी. शर्मा ने जब ट्रिब्यूनल में लड़ाई लड़ी तो 80 आदमियों को कोई ये लिखकर दे दिया कि इम्पीरियल होटल में कोई स्टेंडिंग ऑर्डर नहीं है इसलिए मालिक को वर्कर को सस्पैंड करने का अधिकार नहीं है। मालिक चले गए सुप्रीम कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट ने भी यही आर्डर दे दिया। तो उसके बाद मालिक ने बुलाकर समझौता किया, सबको ड्यूटी पर लिया तनख्वाहें भी बढ़ाई। 9 लाख रूप्ये का एरियर दिया पिछली तनख्वाहों के बदले में। फिर यूनियन बन गई तीनों होटलों में और वहां पर जो लीडरशिप बहाल हुई है वो हमारी इंडस्ट्री की लीडरशिप है।

Q. : एक तरह से आपकी यूनियन में और इसका भी वहां बढ़ाने में प. नेहरू का एक अप्रत्यक्ष रोल है।

Ans : इसमें हमारी पार्टी के एक कामरेड बी.पी. नायर वो गए फिरोज गांधी के पास औरवो लेकर गए हमें नेहरूजी के पास, तो इन सबका रोल भी है और पार्टी का रोल भी है, नायर का रोल है, फिरोज़ गांधी का रोल है, प. जी का रोल है।

Q. : आपकी लाइफ में 1955 की हड़ताल का असर आकी बाद की ट्रेड यूनियन की होटल इंडस्ट्री पर पड़ा?

Ans : 55 की हड़ताल का बहुत बड़ा असर पड़ा है। आगे आने वाली हड़तालों में इम्पीरियल की हड़ताल सबसे बड़ी हड़ताल थी। मेरे विकास की मंजिल और पार्टी का विकास भी बहुत कुछ इससे संबंधित है।

Q. : आपने बताया कि उस वक्त दिल्ली में केवल प्राइवेट होटल ही थे और सरकारी कर्मचारियों को भी वहीं पर जाना पड़ता था तो पं. नेहरू ने इस सब को देखते हुए सरकारी होटल को बनवाया। तो ये कैसे हुआ, इसमें आपकी यूनियन का भी कोई रोल है?

Ans : इसमें यूनियन का कोई रोल नहीं है। इसमें रोल है सोशलिस्ट ब्लॉक का। सोशलिस्ट ब्लॉक का एक बहुत बड़ा असर था। पं. नेहरू जी के दिमाग पर था क्योंकि सोशलिस्ट ब्लॉक हिन्दुस्तान को हैवी इंडस्ट्रीज इंडस्ट्रियलाइज करने में बहुत बड़ा रोल अदा कर रहा था। पूंजीवादी देशों ने हेवी इंडस्ट्री देने से मना कर दिया था तो समाजवादी देशों ने उनको देने का वायदा किया था। इसके बाद पं. नेहरू पर समाजवादी खेमे का बहुत बड़ा असर था इसलिए जब वो रूस में दौरे पर गए तब होटल को सरकारी सेक्टर में खोलने की प्रेरणा उन्हें वहां जाकर मिली। ये मैं इसलिए कह सकता हूं क्योंकि जब वे वहां से वापस आए तब आकर उन्होंने एलान किया कि सराकरी अपने सेक्टर में होटल खोलेगी, क्योंकि वहां उन्होंने देखा कि सरकारी सफलतापूर्वक अपना होटल चलाती है, अपने मेहमानउसी में रखती है, कोई ज्यादा पेरशानी नहीं है।

Q. : तो क्या ये सिर्फ बाहर का ही असर था या फिर कुछ लोकल कारण भी था जिसकी वजह से पं. जी ने सरकारी सेक्टर में होटल बनाने का ऐलान किया?

Ans : लोकल कारण यही थे कि उनके जो भी सरकारी मेहमान आते थे उनको बड़ी तकलीफ होती थी और ये आबरॉय उनको ब्लैकमेन करता था, क्योंकि उस समय केवल 3 या चार होटल थे जो आबरॉय के कब्जे में थे और सरकार को मजबूरी में दिल्ली में होने के नाते इम्पीरियल की ही जरूरत पड़ती थी और इसलिए नेहरू जी इससे दुखी थे। इसकी वजह से ही उन्होंने ये सब सोचा और इसका फायदा भी हुआ। अब अशोक होटल खोलने के बाद इंटरनेशनल कान्फ्रेंस जितने भी सरकारी हुए सभी उसी में हुए, और सारे प्राइवेट होटल के मालिक चिढ़ गए थे कि ये तो सरकार ने हमारे सीने में छुरा मार दिया। सारे प्राइवेट होटल के मालिक दुखी थे कि ये सरकारी क्षेत्र में क्यों, ये तो हमारे पास होना चाहिए इसलिए अब के जब ये नई सरकार बीजेपी की आई तो उसने क्लिंटन को ठहराया मोरिये में, अशोका में नहीं ठहराया और पहले जितने भी बाहर से सरकारी मेहमान आते थे सब अशोका में ठहरते थे, चाहे वो किसी भी देश का सरकारी मेहमान हो सभी यहीं अशोका में ठहरे हैं। अशोका का रोल बहुत बड़ा है, बड़े-बड़े हॉल हैं। एक हॉल है जिसमें ढाई हजार आदमी एक समय बैठक मीटिंग कर सकते हैं, कुर्सी पर और ये सुविधा कहीं नहीं हैं अशोका में 6 इंटरनेशनल कांफ्रेंस एक साथ चल सकती है और सारी सुविधाओं के साथ, और सारी सुविधाओं के साथ, और उनको रहने की जगह भी दे सकते है क्योंकि वहां 750 कमरे हैं और इससे जितना भी पैसा foreign exchange है वो सब सरकार को जाता है और जो प्राइवेट में आता है वो सब उनकी जेब में जाता है। इस foreign exchange से देश के विकास में बहुत मदद मिलती हैं पर देश की शत्रु सरकार ऐसा क्यों सोचेगी जो देशभक्त सरकार होगी वही तो ऐसा सोचेगी। ये सरकार ऐसा क्योंकि सोचेगी। सब विदेशियों के लिए दुकान खोल दिया, पूरे देश का दरवाजा खोल दिया, बाहर से जो मर्जी माल लाकर बेचो और हमारे मुल्क से जो मर्जी माल खरीद कर ले जाओ।

1961 के सेटलमेंट के बाद वहां पर पहली समस्या खड़ी हो गई कि इंटक यूनियन की formation हो गई। आरूद अली जाफर भाई लेबर मिनिस्टर थे उन्होंने यूनियन वहां खड़ी करवाई। He help us Mr.

Mikattan Khanno was a minister of over housing under which the hotel work running Ashoka hotel. It was already coming operation under the minister of over housing. जब inter यूनियन की formation हुई तो वहां पर झगड़ा शुरू हुआ 1961 के बाद। फिर वेरिफिकेशन और मेम्बरशिप का आर्डर हुआ। वो चाहते थे कि इंटक को मेजोरिटी छोड़कर यहां पर उसे recogniose किया जाए। वेरिफिकेशन में उस वक्त कुल 1100 कुछ मजदूर काम करते थे। 1100 में 900 मेम्बर हमारे थे और 47 मेम्बर सिर्फ इंटक के थे और बाकी सब आफिसर और सुपरवाइजर कैटीगरी के थे और हमारी यूनियन को recognition मिल गया क्योंकि उस वक्त का जो मैनेजमेंट था जनरल मैनेजर बिग्रेडियर राज शरीन थे। ब्रिगेडियर राज शरीन ने जबरदस्ती इंटक को मेजारिटी दिखने के खिलाफ स्ट्राइक लिया जो सच्चाई थी वो उन्होंने सरकार के सामने रखी। सरकार ब्रिगेडियर राज शिरीन से बहुत नाराज हुई और उसको निकालने की धमकी दे दी। 1964 में जब उसको निकालने की बात की तब वहां के वर्कर्स ने होटल में हड़ताल की दी। ब्रिगेडियर ने वर्कर्स से प्रार्थना की कि आप लोग काम पर जाइए और मेरे लिए आपको हड़ताल पर जने की आवश्यकता नहीं है। काफी समझाने के बाद रात को 12 बजे लोगों ने माना। 20 घंटे के बाद वो लोग काम पर वापस जाने के लिए माने। उसके बाद वो मैनेजमेंट आई उसके साथ हमारा सीधा confrontations शुरू हो गया क्योंकि ब्रिगेडियर राज शरीन ने जब ज्वाइन किया था 196.0 तो होटल 56 लाख के खाते पर चल रहा था और जब उसे निकाला गया तब वो 56 लाख के घाटे को रिकवर करके 80 लाख के लाभ तक पहुंच गया क्योंकि उसने चोरियां रोक दी थी और इसी बीच 1961 में हमसे एग्रीमेंट करके सबकी तनख्वाहें दुगुनी कर दी थी। खाता रिकवर करके profit 80 लाख दे दिया। ऐसे अफसर को निकालने के बाद जो अफसर आए फिर होटल में लूट मच गई और इंटक के द्वारा अनुशासनहीनता, वतनहीनता और भ्रष्टाचार, चोरी शुरू हो गई। इस भ्रष्टाचार और चोरी के खिलाफ हमारी यूनियन ने हड़ताल की।

Q. : चोरी कैसे होती थी वहां पर ?

Ans : चोरी का मतलब माल स्टोर में आया नहीं और receipt कर लिया गया, भुगतान कर दिया गया तब एक मशीन पकड़ी हमने 75 हजार रूपये की उस जमाने में लाण्ड्री की मशीन थी। वो एक ही मशीन तीन बार आकर चली गई और तीन बार उसका भुगतान हो गया लेकिन मशीन नज़र नहीं आई, हमने इस चोरी को पकड़ा फिर इन्कवारी शुरू कराई उस इंजीनियर को हटवाया। उसके बाद 1970 में ये हालत आ गई कि हमारा एक सैमी चारज का पैसा बनता था जो वेज बोर्ड की रिपोर्ट आने के बाद वो हमारा डी.ए. का हिस्सा बन जाना चाहिए था उन्होंने वो होटल एकाउंट में डाला दिया। वर्कर्स को नहीं दिया। वो मांग लेकर हमने स्ट्राइक की 1970 में। 1970 की इस लड़ाई में पूरे होटल का वर्कर हड़ताल पर आ गया। इस मांग को लेकर कि हमारा पैसा वापस करो। होटल बिल्कुल बंद हो गया और होटल में हमने अफसरों की entry भी बैन कर दी कोई भी नहीं जाता था और तमाम फ्लोर पर हमारे वर्कर रहते थे लाल झंडा गाड़ के। फिर इन्दिरा गांधी के पास गवर्नर की शिकायत गई कि ऐसा -ऐसा हो गया है पुलिस भी नहीं जा रही है। इंदिरा गांधी ने

ऑर्डर दिया कि पहरा मिलिटरी जाएगी होटल खाली करवाने केलिए। पहरा मिलिटरी आई और हर फ्लोर पर एक मजिस्ट्रेट आ गए और उसने हमें बुलाकर कहा कि पांच मिनट में होटल खाली कर दीजिए वरना ऑर्डर मिला है, गोली चलाने का। हमने फैसला किया कि गोली क्यों चलवाएं, 10 दिन हो गये बद रखे, हमने कहा जी हम खाली कर रहे हैं। एक गेट से मजदूर बाहर निकल रहे थे और दूसरे गेट से मिलिटरी अंदर जा रही थी। बाहर हम निकले तो पुलिस ने हम सब को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया, सबको पकड़ लिया। मैं बच-बचा कर निकल लिया डांगे के पास। डांगे से हमने कहा कि हमारे सारे वर्कर पकड़े गए और आपकी मदद से ये सरकारी चल रही है। इन्दिरा गांधी की मेजोरिटी नहीं थी, कांग्रेस (ओ) और कांग्रेस (आई) में बंटवारा हो गया था तो कांग्रेस आई की कुछ वोटें कम पड़ गईं थी तो सी पी आई वोट देकर सरकार को चला रही थी। मैंने कहा आपकी वजह से सरकार चल रही है और उसने मजदूरों को बंद करके रखा है तो डांग बाबू ने इन्दिरा जी को फोन किया कि अगर हमारे वर्कर 6 बजे तक नहीं छूटे को कल की सरकारी आपकी नहीं होगी, हम आपको समर्थन नहीं देंगे। फिर इन्दिरा जी ने आर्डर दिए कि सबको छोड़ दो। पुलिस ने कहा कि जमानत लाओ, हमने कहा कि हमारे पास जमानत नहीं है, वो बोले फिर कैसे छोडें, हमने कहा जैसे मर्जी हो छोड़ो या न छोड़ो तुम्हारी मर्जी, इन्दिरा जी के आर्डर से छोड़ दो वो बोले अपनी-अपनी जमानत दो और भाग जाओ। तो सुबह पकड़े गए थे और शाम को छूट गए। डा. करण सिंह, मिनिस्टर थे टूरिस्म के उन्होंने पार्लियामेंट हाउस में बुलाया और हमारे साथ एग्रीमेंट किया जितने वर्कर सस्पेंड किए गए थे सबको वापस लिया और हमारा एरियर का जो पैसा बनता था करीब 12 लाख रूपये वो उन्होंने मजदूरों के प्रोविडेंट फंड में डाल दिया और फिर मामला सुलझ गया और होटल समान रूप से चलने लगा। इसके बाद कभी भी हड़ताल की नौबत नहीं आई, जब भी हमने नोटिस दिया मैनेजमेंट ने बुलाकर हर मामले में समझौता किया। तब से अब तक 2 दर्जन से ज्यादा सैटलमेंट हुए है, यूनिफार्म के ऊपर, छुट्टियों के ऊपर, दिहाड़ी के ऊपर उसके बाद ये ट्रेडिशन को गया। पूरे एटक में और वो आज भी चल रहा है लेकिन अब दिहाड़ी सिस्टम आने से थोड़ा घपला शुरू हो गया है ये ऐतिहासिक हड़ताल थी। 1955 की हड़ताल ऐतिहासिक थी प्राइवेट सेक्टर में और 1970 की हड़ताल ऐतिहासिक है पब्लिक सेक्टर में। इसके बाद इंटक में कभी हड़ताल की नौबत नहीं आई। 70 के बाद 72 में गरम-ठण्डी वर्दी का सैटलमेंट हुआ। 72 में ही वेलफेयर फंड, मेडिकल लीव ये भी 72 और 75 के बीच में हुआ और प्रीन्ज बेनेफिट, education and children allowance every monthly, night duty allowance, shifted duty allowance, machine operation allowance, cash handling allowance इस तरह से एक settlement की कापी एटक के पास आई। जब से होटल बना है तब से इसका Documentation है। रात को अपने सारे पुराने रिकार्ड ढूंढते थे। छुट्टियां हैं हमारा एक अकोमोडेट होता है बीमारी की छुट्टी में जमा होता है। गवर्नमेंट इम्पलाई हमें गैसेडिर मिलता है इसके बदले में हम ससतिबिंड होलिडे देते हैं, वो हम इकट्ठा ले सकते है साल में, कई तरह के सेटलमेंट हैं।

Q. : अशोका होटल और जो आई.टी.डी.सी. होटल है और जो आपको बेनिफिट आपको मिलता था उसका कोई नकारात्मक प्रभाव पड़ता था Dignify को लेकर स्ट्रगल तो हो रहा है तो आप की डेट में एक जैसे नया डिबेट आ गया है कि ये सब loss making है?

Ans : नुकसान तो जान बूझकर किया जा रहा है असलियत में तो होटल इंडस्ट्री को नुकसान में जाने का कोई मतलब नहीं है कमरे तो डिपेंड करते है टूरिज्म के आने, जाने पर प्रभाव पड़ता है हिन्दुस्तान के हालातों पर कभी यहां उग्रवाद फैल जाता है कभी हिन्दु-मुस्लिम दंगे हो जात हैं कभी भुंकप आ जाता है कमी कोई प्राब्लम हो तो ट्रैफिक कम हो जाता है पर यदि कोई प्रोब्लम न हो तो होटल इंडस्ट्री का अक्टूबर से अप्रैल का 100 प्रतिशत अच्छा सीजन रहता है और बाकी पीरियड़ में 30 प्रतिशत, 40 प्रतिशत, 50 प्रतिशत तक रहता है तो एवरेज आप बनाएंगे 70 प्रतिशत, एवरेज पूरे साल के ऊपर उसका सेल आ जाता है। उसका पैसा आ जाता है। इस पीरियड़ में हमारा ज्यादा काम जो है वो हमारे रेस्टोरेंट्स हैं, हमारे बैकेट, हमारी पार्टी हैं, हमारी कैटरिंग हैं, हमारा ज्यादा सेल इसमें होता है। अशोका होटल में इस वक्त 6 रेस्टोरेंट हैं। एक -एक 24 घंटे चलता है, एक है जो लंच-डिनर पर चलता है, एक है जो जेपनिज फूड है, एक चाइनीज फूड का, एक है फ्रेंच रेस्टोरेंट, एक है फ्रंटीयर, एक है दरबार हॉल। अगर आप लगाएंगे तो जो हमारा एवरेज है फूड जो हम बेचते हैं परचेज डिनर के अंदर वो 400 से 500 रू. है जो मर्जी खाना खाओ। इसमें अगर आप रेस्टोरेंट की सेल को मिलाएंगे तो तकरीबन अगर आप रेस्टोरेंट की सेल को मिलांएगे तो तकरीबन वो ही ज्यादा होगा। ये हमार बहुत सेल है कई-कई हजार की पार्टियां आती हैं अप्रैल से अक्टूबर सीजन होता है। शादी का सीजन है तो फुल पार्टी, पैसे वाली पार्टी तो पूरा होटल बुक कर लेती हैं, कई शदियों में तो होटल होटल को बुक कर लेते हैं, कमरों का भी किराया देते हैं और एक पार्टी आई थी जिसने 15 हजार का खाना लिया और एक हफ्ते तक उसने होटल को अपने कब्जे में रखा और अपने बरातियों को खिलाता- पिलाता रहा, वो कश्मीरी एनआरआई था, तो इस तरह से हमारी इण्डस्ट्री को घाटे में जाने का कोई सवाल नहीं है। होटल की इतनी कमाई तो है ही, ये पैसा कहीं गया नहीं। इससे कोई घाटा नहीं होता, कोई परसेंट इसका ज्यादा नहीं जाता इसका each percent-between 25 to 30% कुल सेल का यह सेलरी चार्ज है आज की पोजीशन में और इनके पास घाटा जाने के 2 तरीके हैं। पहला तरीका तो परचेजमेंट है, माल आया नहीं और चार्ज हो गया और दूसरा रेस्टोरेंट में बगैर बिल के पैसे जैसे आपने रेस्टोरेंट में 500 का खाना खाया और आपको सादे कामग्ज पर लिख कर दे दिया, 500 रू. आपने बिल दे दिया तो ये पैसा एकाऊंट में नहीं जाता बलिक उनकी जेब में जाता है। ये बीमारी पूरी इण्डस्ट्री में है। तीसरा है कि पार्टी है जिन्होंने 15000 का आर्डर दिया एक आदमी का 5000 रूपये, उनका डिनर, लंच था उनका सिर्फ 1500 का बिल बनाया। 15 हजार की बजाए 15 सौ का बिल बना और बाकी पैसे जेब में गए और ऊपर से लेकर नीचे तक में उनका हिस्सा है अर्थात् मैनेजमेंट से लेकर नीचे वर्कर तक। मतलब अफसर, मजदूरों को तो केवल टिप मिलेगा, इसमें सीधा अफसरों का हाथ होता है और ये बाकी पैसे के बारे में हमने शोर माचाया, लिखकर भेजा को

1500 फिर 2000 हो गया फिर 3000 हो गया और ज्यादा से ज्यादा 5000 हो गया फिर भी दस हजार रू. का कुछ पता नहीं है और जो तरीका मैंने बताया था न कि माल आया नहीं और entry हो जाती है वो consume भी हो जाता है तो उसका खर्चा ये कैसे दिखाते हैं मान लो कि एक पार्टी हुई अब एक पार्टी के नाम डाल दिया जितना भी shortage of मुर्गा है उस पार्टी के नाम डाल दिया जितना भी shortage of घी है उस पार्टी के एकाऊंट पर खर्चा चलेगा। अब एक अमेरिकन लेडीज का kid पार्टी हुआ उस पार्टी का जो खर्चा शो किया वो perhead one man has eater 5kg of पकौड़ा आप सोच सकते हैं कि अगर वो खर्चा लगाया जाए तो एक आदमी 50 हजार एक आदमी में 5 किलो पकौड़ा आता है अब अंग्रेज ही थे। अब अमेरिकन थे अगर सरदार भी होते तब भी इतना नहीं खा पाते लेकिन ये सब खर्चा शो किया गया। जो भी shortage होता है स्टोर का या इधर-उधर का सब पार्टियों में पूरा कर लेते हैं तो ये भी चोरी है। ये सब अगर रूक जाए तो तनख्वाह जितनी मर्जी दो उससे कोई फर्क नहीं पड़ता, उससे कोई हानि नहीं है। हमने profit account बना कर दे दिया, हमने मेमोरेन्डम दिया सरकार को कि हमारी इण्डस्ट्री तो घाटे में है ही नहीं तुम्हारा कुल लागत 67 करोड़ है, H.U.T.C. पर और 67 से कमाकर हमने इतनी प्रोपर्टी पूरी इण्डिया में बना ली, कितने हजार करोड़ हमने तुम्हें टैक्स के रूप में वापस कर दिये, कितने हजार करोड़ हमने तुम्हें डिविडेंट दे दिया, कितने हजार रूप्ये का हमने आपको foreign exchange दिया और इतने हमने international event को होस्ट किया उसके बावजूद तुम हमको इस तरह से treat कर रहे हो। कोई जवाब नहीं था उनके पास इसका। इसके लिए हमारी मीटिंग हुई थी अभी 28 तारीख को disinvestmetn सेक्रेटरी Ministry of Tourism, सेक्रटरी, चेयरमैन I.T.U.C. सबके साथ हुई थी। उन्होंने फिर 15 दिन बाद बुलाया है उन्होंने हमसे कुछ proposal मांगा है और मैं तो बीमार हो गया और proposal बन नहीं पाया। तो इस तरह से होटल इण्डस्ट्री जो है, जो एक मुर्गा है उसकी ज्यादा से ज्यादा कीमत 50 रू. होती है ओर वो वहां होल सेल में आता है तो 50 रू. का जो मुर्गा है वो यहां 500 रू. में बिकता है और आपका लागत है उसमें 50 रू., उसके बाद लेबर, मसाला तो इसका लगा लो 50रू. तो लगा लो 100 रू. और ये 600 रू. लेते हैं। एक नींबू है, 1 रू. का, इसकी एक गिलास शिंकजी आप देते हैं 20 रू. की तो घाटा तो कहीं है ही नहीं, तुम्हारी बिल्डिंग खड़ी है, माल बिकता है, पैसा आता है और अगर आप उसे चुरा कर ले जाओ, लूट कर ले जाओ तो बात अलग है। अब सारे मिनिस्टर जो हैं उनके घरों में माल जाते हैं, होटल से चीनी जाती है, चाय जाती है, दूध जाता है, होटल से मुर्गे जाते हैं, होटल से लंच, डिनर जाते हैं, कोई बिल नहीं बनता। ये सब शुरू से ही फ्री में जाता है जब से बी जे पी सरकार आई है, खासकर इनके समय में ज्यादा जा रहा है। इनके मेहमान आते हैं 500 आ गए सब फ्री खाना खा कर जाते हैं ये सब रिकार्ड में है। इसमें सरकार का भी पूरा हाथ है। अंदाजा लगाओ एक चेयरमैन था अनिल भंडारी तो जब नरसिंह राव वाली सरकार ने जब एलान किया कि घाटे वाली यूनिट को हम बेचेंगे तो भंडारी ने कहा कि हम आपसे कोई मदद नहीं लेंगे, हम घाटे को लाभ भी शो करेंगे हमें 5 साल का मौका दो। 5 साल में

भंडारी ने सारा घाटा रिकवर करने के बाद 1.50 करोड़ रू. उसे प्रोफिट में रिसर्व फंड में जमा किया था औश्र उसको सरकार ने निकाल दिया। एक बार तो इन्द्रजीत गुप्ता ने झगड़ा करवा के उसको रखा लिया था फिर उसे दोबारा निकाल दिया। उसके बाद कोई चेयरमैन नहीं रखा। मिनिस्ट्री के सेक्रेटरी देखभाल करते हैं। वो लावारिस हो गया। सारे अफसर जो बेइमान थे, लूट रहे थे उन पर कोई कार्रवाई नहीं हुई, सबूत मिल गया, सी.बी.आई. ने सब प्रुफ कर दिया लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई क्योंकि ये मिनिस्टर उनके खुश हैं, मिनिस्टर के घर का काम करता है, उसकी कोई बनाता है उसकी मरम्मत करता है, उसकी मस्का मालिश करने आता है और अब भंडारी के जाने के बाद कोई चेयरमैन नहीं आया और फिर से loss शुरू हो गया और ये सब artificial loss है।

Q. : 1970 में जो हड़ताल हुई थी उसका रिजल्ट क्या रहा, वो खत्म कैसे हुई?

Ans : हमने एग्रीमेंट साइन किया डॉ. करन सिंह से, मिनिस्टर ने हमको बुलाया एग्रीमेंट साइन किया और सब मांगे पूरी कर दीं, सारे वर्कर जो हमारे निकाले थे सब को वापस रख लिया। एक बार प्राइवेट सेक्टर में किया तो उसके बाद प्राइवेट सेक्टर भी अब हर तीसरे साल सैटलमेंट करता है। वहां इण्डस्ट्रियल सैटलमेंट होता है। पूरे प्राइवेट सेक्टर में वो जब इम्पीरियल वाला बुला रहा था तो ये लोग गए नहीं क्योंकि वहां के लेबर सेक्रेटरी प्रेजीडेंट ब्रजपाल जो हैं उन्होंने कहा कि मैनेजमेंट ने गोप को क्यों कहा हमसे बात करें। मैंने कहा तो तुम बात कर लो, वो बोले हम तब बात करेंगे जब वो हमें लिख कर देंगे। मैंने कहा वो तुम्हारा नौकर बैठा हुआ है, वो तुम पर अहसान कर रहा है तुम उस पर अहसान नहीं कर रहे हो, तो मैनेजमेंट ने कहा ठीक है मत करो और उसने अपनी कमेटी बना ली। 14 प्रतिशत बढ़कर दे दिया तो किसको बुरा लगता है, हजार बारह सौ सब मजदूरों की तनख्वाह में बढ़ोतरी हो गई तो सबने साइन कर दिया, ले लिया और उसने अपनी अलग यूनियन बना ली और उन पर ये केस भी नहीं किया तो मैंने जाकर केस किया उनके खिलाफ और वो केस चल रहा है जब तक ये लोग हैं वहां पर मैं कुछ आशा नहीं करता। ये unexperienced है क्योंकि C.P.M. से आया, वहां होटल वर्कर यूनियन में था, वहां कोई experience है नहीं इन्हें कुछ पता है नहीं और अब यहां आकर प्रेजीडेंट बन गया वो सोचता है कि गोप मेरे ऊपर से कैसे सैटलमेंट करे, मैं बड़ा हूं। प्रेजीडेंट और मन्ना साहब भी हैं उसके साथ तो मन्ना जाने तुम जाना या एक्स. डी. जाने मैं तो बैठा हूं।

Q. : तो 1955 के बाद प्राइवेट सेक्टर में कोई हड़ताल नहीं हुई?

Ans : छोटी-मोटी हड़ताल तो हुई पर वो डिमांड के ऊपर नहीं हुई वैसे इण्डस्ट्रियल इश्यू, इंटरनेशनल और नेशनल इश्यू पर हुई। एक दिन का, दो दिन का जैसे कभी सरकार की पॉलिसी के खिलाफ, कभी रेलवे के हक में और कभी किसी और के लिए लेकिन ये सब होटल मैनेजमेंट के खिलाफ नहीं हुई।

मजदूर यूनियन सिर्फ प्राइवेट सेक्टर में हैं। पब्लिक सेक्टर की तीन यूनियन है एक ऑल इण्डिया आई.टी.यू. सी. इम्पलाईज यूनियन है, एक अशोका होटल इम्पलाईज यूनियन है और इन दोनों में सारे आईटीयूसी के

वर्कर है। अशोका होटल इम्पलाईज होटल में सिर्फ अशोका होटल है तो ये दोनों अलग है और ये जो मजदूर यूनियन है ये सिर्फ, दिल्ली के प्राइवेट सेक्टर में है। बाकी शहरों में हमारी अलग यूनियन है जो प्राइवेट सेक्टर के मेजर होटल हैं वो हमारे साथ नहीं हैं जैसे ताज ग्रूप नहीं है, आबरॉय ग्रुप नहीं है, मोरियो नहीं है, हयात ग्रुप हमारे साथ नहीं है और ये सब बहुत बड़े होटल हैं, उनके पास उनकी अपनी-अपनी यूनियन है और ये किसी बाहरी यूनियन को अपने साथ मिलाना नहीं चाहते वहां की बहुत खराब हालत है। 1970 के बाद जितने भी बेनिफिट हैं, जैसे नाइट अलाउंस, शिफ्ट अलाउंस, फ्रेंच बेनिफिट, एल.टी.सी., एजुकेशन बेनिफिट ये सब प्राइवेट सैक्टर में नहीं है। हमें 1930 के हिसाब से डी.ए. मिलता है 2 रू. per point इस वक्त समझ लीजिए 32 सौ 35 सौ का भी डी.ए. है और 1000 रू. बेसिक है और प्राइवेट सैक्टर में भी कम से कम 4 हजार 4500 से नीचे कोई वर्कर नहीं है, पुराना और अब ठेकेदार के जरिये जो नए वर्कर रख रहे हैं वो इतना ही मांगता है। आई.टी.डी.सी. में आज की तारीख में जो unskilled लेबर भर्ती होगा उसका मिनिमम बेसिक होगा 40 से 60 रू. और 30 प्रतिशत से 40 प्रतिशत, 60 प्रतिशत एचआरएफ, 6 प्रतिशत of 40/60 ई.सी.सी. प्लस 154 अलाउंस प्लस 120 conveyance allowance plus night shift allowance, cash handling allowance and all other allowance तो ये जो इनको कैश मिलता है वो लगभग 8 से 9 हजार है और प्राइवेट सैक्टरों में unskilled वर्कर भर्ती होगा वैसे तो भर्ती नहीं करेंगे क्योंकि वो ठेकेदार के जरिए भर्ती करते हैं वो सीधे भर्ती नहीं करते। सीधी भर्ती तो अब आई.टी.यू.डी.सी. में भी बैन कर दी है, सरकार ने ही रोक दिया है। अब ठेकेदार के जरिए रखने का हो गया है और ठेकेदार के लिए जरूरी है कि वो रजिस्टर्ड हो लेकिन यहां कोई रजिस्टर्ड नहीं होता। एक अफसर को वहां बुला लिया बोला भई तू ठेकेदार बन जा और 50 आदमी रख ले तो 50 आदमी उसके नौकर माने जाएंगे और वो पैसा कितने देंगे ये दोनों में बंटवारा हो जाएगा और ये टेम्पोरेरी होता है एक महीना काम करवाएंगे तो एक महीना बैठा देंगे फिर 2 महीने बाद रख लेंगे फिर एक महीना बैठा देंगे। So I think that the slaverly system has come back.

Q. : प्राइवेट होटल के बारे में आप कुछ और बताना चाहेंगे?

Ans : स्ट्रगल तो बहुत हुआ है मगर अलग बात पर। कहीं पर बोनस के लिए हो जाता है तो कहीं पर किसी दूसरे विषय पर हो जाता है, कभी कहीं तो कभी कहीं हो जाता है जैसे अभी बातचीत चल रही थी बोनस के ऊपर, मालिक ने का हम इससे ऊपर नहीं जाएंगे तो वर्कर ने काम करना बंद कर दिया, मालिक मान गया तो हड़ताल खत्म हो गई। किसी को निकाल दिया तो कुछ protest में लोग बाहर हो गए, कई जगह मालिक बंद करके भाग जाते हैं lockout कर देते हैं, अभी कितनी जगह तो रेस्टोरेंट बंद हो गए।

Q. : 1980 के और उसके बाद के समय के बारे में बताइये।

Ans : 80 का समय तो हमारा नेगोसिएशन का समय था। सेटलमेंट साइन हुआ जनवरी 80 में। ये जो वेज बोर्ड का recommendation आया था इसमें हम all over india में uniformity लाए। वेज रिवयू

कमेटी की रिपोर्ट उसको इम्पलीमेंट करने की हमारी जो स्ट्रगल चली उस स्ट्रगल में सारे हिन्दुस्तान की जितनी भी ट्रेड यूनियनें थी उन सब को इकट्ठा करके हमने joint action committee of trade union बनाई थी। उनके साथ मैनेजमेंट का नेगोसिएशन चला 18 रात और 18 अशोका होटल में। और वो साइन हुआ था 28 जनवरी 1980। वो डब्ल्यूआरसी वेज रिवयू कमेटी रिर्पोट।

Q. : 80 के दशक में प्राइवेट सेक्टर में क्या situation थी ?

Ans : 1982 में वहां सैटलमेंट साइन हुआ, इन्डस्ट्रियल सैटलमेंट। पहले तो हुआ था 78 में फिर हुआ 82 में फिर हुआ 86 में, इसके बाद हुआ 82 में फिर हुआ 86 और इसके बाद हुआ 94, 98 में। आईटीडीसी का अगला होगा मार्च तक पहले पब्लिक सेक्टर फिर प्राइवेट सेक्टर उसका जो बेनिफिट इधर लेते हैं उधर बढ़ा देते हैं। ये आईटीडीसी में हुआ, सैटलमेंट हो गया they got it now we have started in private sector. पहले से हमारी यूनियन बनी हुई है मौजूदा लीडरशिप इस बात को जानती नहीं, समझती नहीं, समझने की कोशिश नहीं करती, मस्त होकर बैठी है, ऊपर की लीडरशिप मिली हुई है। पेंशन बनाया, पेंशन के फेसले को नहीं मानते। मन्ना साहब फिर भी कहते हैं कि ये ठीक है 1980 से लेकर 1990 तक पब्लिक सेक्टर, प्राइवेट सेक्टर दोनों में ही नेगोसिएशन का समय था। अलग-अलग साइन हुए, 80 में हुआ पब्लिक सेक्टर का, 82 में हुआ प्राइवेट सेक्टर का फिर 86 में हुआ हमारा पब्लिक सेक्टर का, फिर 88 में हुआ प्राइवेट सेक्टर का, इसी तरह फिर हमारा 90 में हुआ 92 में हुआ, फिर 96 में हुआ। प्राइवेट सेक्टर में इम्पीरियल, विक्रम, राजदूत, कनॉट प्लेस के सारे रेस्टोरेंट हैं, डिपलोमेट होटल हैं, इसमें सब नई इण्डस्ट्रीज हैं। पुरानी इण्डस्ट्रीज की वर्किंग कंडीशन अच्छी है इस नई इण्डस्ट्रीज में। और हमारे वाले पब्लिक और प्राइवेट सेक्टर में जॉब सिक्योरिटी है पर दूसरे प्राइवेट सेक्टर में नहीं है।

ते 80 और 90 का दशक सैटलमेंट का ही रहा है कोई स्ट्रगल का नहीं हुआ। एक सैटलमेंट खत्म हुआ, तो दूसरा शुरू हुआ। इसके बाद मैनेजमेंट शांत हो गई कोई confrontation नहीं हुआ क्योंकि इससे पहले हम बहुत confrontation कर चुके हैं और वो वर्कस की शक्ति समझ गए है।

होटल इण्स्ट्री का जो 50 से लेकर अब तक ही जो भी बातें थी सबका हमने जिक्र कर दिया है वर्कस का, वेज वर्क का, सेटलमेंट का और उसके जो पहले ही कुछ अवार्ड आए हैं जिनका जिक्र होना जरूरी है। सबसे पहला अवार्ड आया था 1950 में वो था दुल्लत अवार्ड। उस दुल्लत अवार्ड में मिनिमम वेज 45 रू. जज ने फिक्स किया था। 15 रू. खाने का और 30 रू. तनख्वाह का जिसको हमने नामंजूर कर दिया और नया चार्ज का जो डिमांड भेजा था उस पर हम स्ट्रगल करते रहे। उसका अवार्ड आया 1962 में उसको कहते थे वेन्गर अवार्ड आया 1962 में उसको कहते थे, वेंगर अवार्ड उसमें सारी दिल्ली के होटल और रेस्टोरेंट का worth था अशोका होटल को मिला कर इसने पहली बार होटल इण्डस्ट्री के लिए कुछ वेज पेटर्न का lodge तय किया था जिसके डी.ए. को cost of living index से जोड़कर के होटल इण्डस्ट्री में शुरू किया जो इससे पहले नहीं था। जो प्वांइट के हिसाब से बढ़ता-घटता था। इस वेंगर अवार्ड को further इम्प्रूवमेंट के लिए

हम लोगों ने इसमें संघर्ष किया। पहली बार तो इस वेंगर अवार्ड के implementation के लिए संघर्ष करना पड़ा। मालिकों ने implement ही नहीं किया। वो implement होने के बाद फिर हमने further improvement की संघर्ष शुरू करी। 1964 में हमने मांग की कि होटल इण्डस्ट्री के लिए वेज बोर्ड की स्थापना की जाए। और वेज बोर्ड ने फिर सारे अवार्डों का ख्याल रखते हुए जिसमें वेन्गर अवार्ड, मैरिना अवार्ड, एम्बेसडर अवार्ड, दुल्लत अवार्ड। और दूसरी इण्डस्ट्रीज के norms को देखते हुए वेज बोर्ड ने एक नया norms तय किया जिसकी रिपोर्ट 1970 आई, और effective date या 11.7.67 effective का मतलब उस दिन से लागू हुआ। इसके प्राइवेट सेक्टर के मालिकों ने implement करने से मना कर दिया। इसकी implementation के लिए 70 दिन की हड़ताल चली। 1970 में मामला सुप्रीम कोर्ट में गया, सुप्रीम कोर्ट ने फौरन आर्डर दिया implementation के लिए। और उसके बाद ये implement हुआ। 1970 की हड़ताल के बाद प्राइवेट सेक्टर में भी इण्डस्ट्री लेबल पर negotiation शुरू हुआ for a future wage federal जो आज तक जारी है। उसके बाद 1970 की हड़ताल के बाद वो इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि भविष्य में इण्डस्ट्री लेबल को negotiation से ही सुलझांएगे। इस समय में हमने एक और हड़ताल लड़ी डालमिया के खिलाफ केवेन्टर डेरी में 1968 में जो 68 दिन चली। Ultimately Dalmia has closed down the back forever.This is in brief history of my activity in the hotel industry since 1948 till 71 till this 2001. Abour the political activity I was propose to become secretary of State in 1997 when comrade Prem Sahai Gupta wanted to retired. At that time party was in very much anicial crises, party was in the total norm from other sources from 25 thousand to 30 thousand. In that condition nobody wanted to become a secretary proposal come to comrade Manna who refuse to become secretary. Then ultimately my name comes and I accepted. I worked since 87 to 95 and I proud to say that in my period there was a party congress in Delhi at first time. इस पीरियड़ में पार्टी की मेम्बरशिप भी बड़ी और financial position थी कर्जा उतारने के बाद हम करीब 14-15 लाख रूपया एफ.डी. कर सके जिसकी वजह से अब हर मीहने की इन्कम से हमारी पार्टी का संचालन बढ़िया तरीके से हो रहा है।

Q. : इसके बाद आप एम.एल.ए. का इलेक्शन भी लड़े।

Ans : इलेक्शन तो हम बहुत बार लड़े। 1964 में लड़े लेक्ट्रल कॉलेज के लिए, उसके बाद 83 में लड़े एम. एल.ए. के लिए, 81 में पार्लियामेंट्री इलेक्शन और फिर 98 में लड़े एम.एल.ए. के लिए। 98 में कनॉट प्लेस गोल मॉर्किट से लड़े थे।

Q. : your political involvement also helps you is you trade union movemnt?

Ans : Of course, with out politics no trade union movement can be successful. In my political activity in Delhi. I started pad yatra all over Delhi. When I

become party secretary so I started giving more attention to the Delhi city poor problems, Delhi people problems and party organisations in different districts.

Q. : When did you started this pad yatra?

Ans : 1988, after padyatra when all over Delhi had a big demonstration formed assembly on the demand of the Delhi people. Thousand of people participated and that demonstration after that Delhi party became in line light in Delhi poor citizens then I started building the organisation reorganise the districts, many districts and involved in political campaign in Delhi party. After 95 I remain Delhi preparation of party congress which were going to held at first time in the history of the party in Delhi. So even though we were very small party but inspirations of comrade Farooqi and other senior leaders I took the responsibility to host the party congress and all the party members were organised for this party congress and party congress were very success in Talkatora Stadium thousands of Delhi state people come outside. And different Dharmshala and hostels, stadium were booked for the delegates. Thousands of movementless were enrolled and all the party member became active in collection of voluntless and preparations and propaganda receiving the delegates and looking after the delegates. 800 delegates were came. So in this period I remain big till 95 after 95 I was the choose for the party secretaryship then I took over the responsibility of the trade union. Then goes after party congress we had very good in the party organisation, party members, increasing party membership. After correction of the party congress we saved about 14 to 15 lakh rupees for Delhi party, we just save with the party and thismonth we are getting address to the party for the day today problem. चूंकि दिल्ली में नेशनल इवेन्टस होते रहते हैं, रैलियां होती रहती है, प्रदर्शन होते रहते हैं, पोलिटिकल कैंपेन होते रहते हैं तो उन सब में दिल्ली पार्टी को इन्वोल्व होना पड़ता है चाहे वो किसानों का मूवमेंट हो, ट्रेड यूनियन के मूवमेंट हो, चाहे वो पार्टी का मूवमेंट हो, यूथ का हो, स्टूडेंट का हो जो नेशनल लेवल पर हो यहां इवेन्ट आएगा। दिल्ली पार्टी को वो करना ही होगा। इस तरह से पार्टी की जिम्मेदारियां तो हैं ही और नेशनल लेवल की जो जिम्मेदारियां आ जाती हैं हमें वो भी पूरी करनी पड़ती है। but the party leadership has alert in this matter and we can't takes all the responsibility depend upon the leadership ये 90 से 95 तक का प्राब्लम था 95 के बाद हम involve हो गए regulation of I.T.U.C. this was completed in 96 signed the settlement then the work of implementation of that settlement and the further review committee, we had

also review the carden time to time, carden should not be stadinated in one category without getting permission should also review the carders of the I.T.D.C. suddenly after 96 wo remain big with organisation of the trade union different units or there is a rivalarism in the trade union also, particularly in Delhi we have a division depend the AITUC, ITUC of the unit one or two unions, HMS is also there in the rivalary union or other unions in every where AITUC and INTUC hs a rivalry and this present circumstation the govt. govt. including sectors mostly they patronised anti AITUC trade union, may be introduce of INTUC or may be ITUC gthey patronise them, then they even fighting against this policy and defeating them. It is very political task. So that is why we are still holding a kamaan of INTUC but management cannot hear the implement any policy without agreement with the AITUC and on this disinvestment we started the revolution against it. Then the last month 28 they invited us, they called us disucss and explained the problem policy, they were explaining their policy and we were explaining our policy we were straight foreword. They were invite me after 15 days, they will come with some proposal and of course you are interested to protect your workmen, I am interested to protect the govt policy and let us see where we can meet. They are not invited B.M.S. they invied INTEC but they were not turn up. They don't wanted to see Vilas, they invited H.M.S. when the H.M.S. come they co-operated with us, they co-operate with AITUC because the position of the AITUC is prominential so H.M.S. hs to follow us. And B.M.S. and INTUC and not follow because if is their govt. policy. Either they can go on strike and egitation now they can speak to saying diveate and the ITUC saying diveate but they can not come together generally in egitation they are forced by the workers to come out. So the last meeting only AITUC and HMS were there. HMS also has a different mean. Hind Mazdoor panchayat. बाद में एचएमएस सुसुबिच ग्रुप का भी तीन-चार है, लोहिया ग्रुप, नारायण ग्रुप है और न जाने कितने ग्रुप हैं। इसमें भी देखिए जनता दल जो बाहर रहे गया है एनडीए से, they are associating and other thinks it's a stupid game political movement is out, they had a different views. This HMS as a trade union base and there was some top going on with AITUC and because of the political reason we afford. Political reason is that the HMS is belong to National conservative trade unions which is the American imperialist being arbitraining to eliminate the world federation of trade union and once we

merge with the HMS, their condition was to leave the WFTU and they agreed for 2 years only. After 2 years they can take a decision and there were the majority because of the railway worker. HMS come in majority and we were come in minority because the 2 years they were take a decision to merge with agreed to ICTU so we will be go there and then CETO will remain is the field ws the class struggle against C.P.U.F. gone and they will be handicaped. Politically we can't do this, either we have to leave that organisation or to leave the class stgruggle. This was the reason so I wrote a three page note to the party. That note A.B. Bardhan told me that nothing is going to happened, so I was happy decision on the working committee was also happy.

Q. : जो आपका समय था सीपीआई सेक्रेटरी में उस वक्त आपने बताया कि बहुत सी पद यात्रा और बहुत बड़ी पार्टी कांग्रेस ने बनायी जिससे कि यहां के यूनिट को थोड़ा सा हेल्प किया लेकिन आपने पार्टी की मशीनरी को इस्तेमाल करना कभी समझा कि ये ट्रेड यूनियन का होटल इण्डस्ट्री का इश्यू है। उसके लिए कभी demonstration करना पड़ा था पार्टी के क्लैप के नीचे या फिर उसको अलग क्लैप, होटल मजदूर के क्लैप में ही ?

Ans : No, it is all depend on the subject of the demonstration. If it is political, the party has to take the initiative and all the worker has to take part in this may be hotel worker may be any other worker you tell politicalised and being the party and then agree with our politics and which our issue we have an demonstration that all the worker has to take part even it is a political and if it is a jail union madelist cestainly it is a form of the trade union. No conflict, no contradiction any where.

Q. : You have told about this 95-96 you were engaged in negotiations and you came a carder review committees promotions.

Ans : In the month of June 1996 we signed the agreement on the carder review after that 2300 workers got promotion from 19 Sep. 94 who were staginated in the category without getting promotion. Before they were staginated more than 12 layer in one scale so after review they were get the promotion and after completion if cestain near of service every body will get-automatic committee up to the executive layer. So after the completion of this carder review we started a recharter demand on the basis of fifth commission recommendation. We started concertrating on chartered demand. We wanted teritory between the govt. employees and the hotel workers. After the long negotiation, this negotiation

was completed on last year in May 2000 which was effected from 1.1.97 and divert as power with the simply govt. employees I.P.A. pattern on the line of Mohan Committee recomondation accordingly the minimum in crease of the wages was 50% of totla wages and minimum wage came to basic pay of 40/60, 60 aniscent in category and highest in 7200 in the skill category basic pay non executive. In addition 30% of basic pay HRF, 6% C.C.A on the basic pay and 50% as food allowance 120 as convence allowance and 100% newtrilisation. On the same line we are going to start negotiation in private sector very some organisaitonal problem in private sector and there are some difficulties, which are go then come. Now I want to mention about the positonin area which idelogical that in Bihar. When I left my village I was completely undeveloped uneducated, no drinking water, arrangement no electricity no roads, no house, no schools. Today only differences there are some schools up to VIIIth and no road has been constructed, no drinking water arrangement is there, no electiricty has been provided in that area stil beckward and whenever the election take place in the Bihar I used to go for one month for the party election in my area. I have round each and every village to build up the party along with the worker leadership in 1969 I went ther and I build a very good party organisation but unfortunate parties those who joined us they were generally came from the industrial cities where they were working as a industrial workers. They came back to the villages and tghey join us, they have part in their different respect cities. So they can be party and their party was very good in that district and that a total picture is seen because the castism has come. Party has born inter that and they were as the politicalise they had become experienced they are joined them. Then along with there are some group they give the nationalise group but suddently they were suppressed the other caste. Yadav is the leader of that come and suppresed the other caste. So every where caste reason has become the big problem. Then party has glown up in that area but even in the party the caste reason disturbed me, though this problem has not in our trade union movement all caste joined mean the movement. But whenever they good the paradis goes to the BJP, the total vote has gone to the BJP but the same Pahadi come in Delhi and cheeked it. They don't vote us then I stood for elections in New Delhi they vote for the BJP or congress about the

caste. Thisis the main draw back in my vote caffe. Our party working for all the classes, their organise under the banner of AIEBA and the leadership of the AIEBA is under the C.P.I. but if our leader come in the education failed because their organis does not vote for them. Same hotel workers did not vote for both why, what is our difference I don't know what kaching difference whatever it is.

Q. : जिस उत्तराखंड का उदाहरण आपने दिया, उत्तराखंड का वर्कर लाल झंडा लेकर होटल मजदूर यूनियन में या बैंक इम्पलाईज यूनियन में या एल.आई.सी. यूनियन में था या किसी भी पार्टी का जो mass front है दिल्ली मे हमारे साथ है लेकिन ऐसा भी तो एक कारण हो सकता है कि उत्तराखंड में हमारी पार्टी बहुत कमजोर है।

Ans : उत्तराखंड की मांग हमारी पार्ट ने ही पहली बार कि थी 1952 में। We only party formed first in Uttarakhand district state concept, no other party had formed ther. Only C.P.I. was there but I don't know what is the problem there. Domination is the castism so 98 percent people think that their leader is a Hindu BJP. BJP is the party of Hindu's and we are Hindu Rajpoot, Brahman in Uttarakhand. I think our party has not stabled in that area and whenever our party was struggle in that area there was some M.L.A. elected comrade Govind Singh Rao was M.L.A. our comrade also sacrifice in that area against the Rajas Anyay. But after that generation the next generation is not heard about any political struggle on the issue of Uttarakhand people's problem and then start some struggle. And the same thing in other todays partys problem is that parties people are divided in caste that we have not diverted against the class struggle because in the period of so long there was some land grab movement, there was some de-holding against the beholding problems all over Delhi, all over India. So whole party was involve in class struggle activity. In that period consistence had come up and the party had get a result they have a 16 members in the Parliament we can go for the struggle in the villages on their issues, on their problems, land reform issues and the rentless labour problem and there are hundreds of problems. Unless we go and check up their matter, struggle and sacrifice, you can't give them base in their dividend. Wherever we are going we gave base. West Bengal peoples has the life in villages because they have struggle, they have some problem, they are not strong in the cities. Our party struggle for them, even in the Andhra in the Kerala. Our party is one of the biggest party in the country. But today our party is in crises. Even in the party there is a castism, we don't

say but I understand, I see them. Castism effecting not only C.P.I. whole movement even naksalite. Among the naksalite there is castism. So these can be over the first of all the party leadership has to involve the young generation, if I remain in leadership I don't allow younger to come and take over the highest post so now the party go to involve the younger generation in the leadership, they give them responsibility. I am giving the hotel industry I am not very changeable person but leadership is there I have the responsibility. I don't know about the negotiation and I negotiate with the whole team and whole team has been fully aware of the every problem of the worekrs industries. They will consult me some time on some issues. In public sector unions I developed leadership but in private sector I failed be cause. One younger comrade I brought in the leadership from hotel Imperial comrade Kailash Pant. Unfortunately he expired last year and I was depending upon him. I brought him in the party state council and then state executive so I was just depnding upon him. This was my fault. So collective leadership was not developed as developed in this sector, this leadership has not developed there. Therefore today what has done only two persons had become the whole centred of deamnds. No third person is involved in their activity. Straight leadership is not serioused.

Q. : In hotel union how second line leadership you have developed in public sector.

Ans : I have given responsibility to them first in different then they should aproach me and if there any difficulty they oil are consulting me and I help. Whenver front leading problem is there than only in that case I ovted them.

Q. : Even now you are also old but later on like you are going out into old age other than out of the improvement into the hotel. Do you think that there is leadership which can take over or collapse.

Ans : No, not at all, they are in the state councellor, they are in the district complex executive, they are in the party executive they are in the trade union respresentive, they are in the every where, There are no crises specially in the public sector. But I have a routeen there in private sector also. The day I come out of this problem the leadership will be trake over immediately. Still they are running but I am not allow because the distruption they start there it should be

go by process of correction go norms and party. So first I got the edit of this matter with the correction committee after correction committee we take up a state policy executive and then we will take the sesson. I am not in hurry because the witness in trade union movement also has come because the trade union leader has become currupt, commercialised, they give interview in the percentage basis 10%, 30%. I will take 20% that means you are fight for it, I nothing todo only thing because to getting married and fighting like a proper or like a advocate. He is wrong politicalised I need getting his benefit they were getting his benefit both are happy. There is no individual ideiology and that proof has been given to the straight leadership. It there is any party people in party has take its decision it is not my problem.

Q. : 97 के बाद 2001 तक कोई और सैटलमेंट या आपकी इण्डस्ट्री में और कुछ हुआ है?

Ans : 97 से तो वेज रिवीजन का फैसला लागू हुआ है। ये भी 2000 सैटलमेंट हुआ 15 हजार जो एरियर पेमेंट हुआ। उसके बाद तो disinvestment का ही चल रहा है। ये disinvestment or privatisation का प्राब्लम तब शुरू हुआ जब इंटरनेशनल, पोलिटिकल से डिस्टर्ब हो गया सोशलिज्म क्योंकि जब तक सोशलिस्ट सिस्टम रहा तब तक दनिया का जो balance था वो कंट्रोल में रहा क्योंकि सोशलिस्ट सिस्टम बहुत मजबूत था तो इम्पीरियलिस्टों की ये हिम्मत नहीं थी कि वो दुनिया के किसी देश को दबा सके। उन्होंने conspiracy करके सोशलिस्ट में उलझने पैदा कर दीं। 85 तक ये बैलेन्स जो दुनिया का था वो कंट्रोल में था जैसे ही सोशलिस्ट सिस्टम डिस्टर्ब हुआ वैसे ही इम्पीरियलिस्टो ने दुनिया को दबाना शुरू कर दिया। वर्ल्ड बैंक के फंड के जरिए वो दुनिया को मार्किट पर कब्जा करना चाहता था। कोई किसी देश को developed नहीं होने देता क्योंकि अगर developed हो जाएगे तो उनकी मार्किट बिगड़ जाएगी इसलिए वो किसी को developed होने नहीं देते। और इसलिए उन्होंने ये नई पॉलिसी चलाई कि जितने भी stools थे उनके वर्ल्ड में they all become a imperialist and the India this R.S.S. and B.J.P. is beginning the imperialist. They supporting business and were suporting the . They are though white the hitler belong the Hindu, they are waiting for the charge. Though they had a very two members in the parliament. Since Nehru was there, there was not, force had come. After him they started struggle against pubic sector, non alin movement, against the policy of the Jawahar Lal Nehru industrial policy, economic policy. The same party started the world king of congress under the leadership of Morarji Desai was devided congress 'O'. Then the swatrantri party, congress 'O' and the BJP was against this policy. Then they started egitation under the leadership of Jai Prakash

Narayan the same group. Jai Prakash Narayan was the communist. He said that China is really number one. So politically the people rejected him. This was the line of Jai Prakash against the communism, against the Nehru policy, against the socialism. So tht group become arrived of the system and he become leaders of the 'Sampurna Kranti' supported by international imperial block. In India I was fighting against the Jai Prakash Nerayan J.P. तेरे चरखे को हम निपटेंगे only communist party struggle against him. U.P. said C.P.M. is not be kept. But I don't know what was their logic so now they joined hand with the Janta Party against congress, against Indira Gandhi. Because of anti congress result and C.P.I. had a alliance with the Congress. I against congress 'O' for the nationalisationof the industry because we nationalise many industries during hat and so many others. So party was supporting and parliament also. So CPM become opposite to C.P.I. that's why the C.P.I. go with the B.J.P. we also though against this emergency time, against the wrong polcy of Sanjay Gandhi and thousnads of C.P.I. leadership or the that period only is that period Sanjay Gandhi granted us, the trade union of 1942 and we reply and we follow it. But under the leadership of J.P. Comrade they come in power and whenver they come in power first step they taken against the public sector, they appointed a committee of Boothlingam to fix the wages of the workers, to reduce the benefit of the public sector and more help to the private sector. This was their life against that only trade union movement though against the Boothlingam committee, not C.P.M., C.P.I though because C.P.M. with Janta party govt. they were supporting them. They may accept today or may not accept but this is a fact. Only the C.P.I front against it. AITUC front against, the bank employees front against if. And that was under the pressure of the Birla, Tata memorandum. Memorandum gives in the period of Indira Gandhi but she did not agree than the struggle against the leadership of the Jai Prakash Narayan. It Indira Gandhi agreed with the Birla Tata memorandum then the Jai Prakash movement did not started whole media of Tata Birla has become against Indira Gandhi. All Media like Time of India, Hindustan time, Indian Express they made the Jai Prakash Narayan as a hero Indira Gandhi as Zero but they were failed because their politics the R.S.S. joined membership problem has come. Then the any other socialist leader inside the Janta party, they though against

the R.S.S. That why the Janta Party broken up and they became so many parties Janta Dal became from that party. Now against the same imperialist block, their media had made Indira Gandhi as Hero and others are zero. In 1980. She got a highest majority in the Parliament and then in the period of Rajiv Gandhi it was shift and Chandrashekhar shift and again congress came inpower and then the BJP completely shift and Narsimmha Roa gives this policy he was suported by BJP and then in parliament he got majority. शुरू शुरू में नहीं था बाद में हो गया। शुरू में इसी के भरोसे चल रहा था और जब इसने पॉलिसी का ऐलान किया तब आडवाणी ने कहा कि ये तो हमारी फाइल चुरा ली है नरसिंह राव ने इसका मतलब उनकी पॉलिसी भी ऐसी थी। so than started this problem and we started frontiers and hotel industry had also started the big demonstration against the trade union on Safdarjang Road in 1992. So I was arrested it was against us and I contested the case of 15 thousand. It was withdraw in 2000 and after that we hold so demonstration in Parliament we line here submitted never enough to prime minister Narsimha Rao even I proved there to Narsimha Rao that hotel industry is a highly profit area. I gave the detail though he was keep quite I personnaly met Narsima Rao. I gave him memorandum. He said we will think about it. But he did not gave impliment. But when B.J.P. came in power they started implementing herself. इसका कम से कम ये था कि हम जो कमजोर है उसे बंद करेंगे लेकिन यह तो कहता है कि हमारा काम ही नही है यह सब चलाना। Already we are fighting now all the trade unionhas helped together. Improving identify though the bhegining AITUC was not in this moment but now on this month on 2 hours strike AITUC is there we may sit there and all other trade union of India are also there.

Q. : क्या आपको नहीं लगता कि B.M.S. को साथ में लेना नहीं चाहिए ?

Ans : अगर बी.एम.एस के साथ जनता है मुझे तो उन्हें लाना है struggle में और जब जनता उन्हें साथ में लाने को तैयार है तो हमें उनको साथ में लेने से क्या दिक्कत है और जब हम जानते है कि उनको नहीं लेने से जनता नहीं आएगी हमारा struggle फेल हो जाएगा। So BMS wanted to join our hands because it is our work it isnot BMS work it is not ITUC work and it they trying the issues why should we influenced itself. ते ये policy maker है और इस पॉलिसी के खिलाफ जो भी लड़ने को तैयार है which against the impeialism which against her communalism and who in favour of land reform and hey may become part of the communist, they will join us and if tomorrow BMS want to fight against

this policy why should meet him, out them. ते चाहिए कि इस लड़ाई में यही कंडीशन हो इसमें संकीर्ण अप्रोच जे थी left party की that has become problem they are very narrow minded जब कोई stage लगा हो तो उनकी ये कोशिश होती है कि all should be proved and the same holding they should remain. There may be come closed there they should scome close and their policy should come close. They have to appointed all the settlements. When the politics were taken by the party in 1977 then we left the chief ministership in Kerala and joined left front. They knew there everything go out because our political line was to form that majority front. All the alternative न जनता दल न BJP न कांग्रेस they have to provide third alternative and if you want to provide third alternative you have to take all against BJP and congress people. And what ever witness aof that party you have to a commodate and you can form it. So our party is doing so many sacrifice, the sacrifice for so many seats and we are getting very few seats in West Bengal but we don't want to live in this for the of more seats because that front is more important for the nations than some more seats for the same.

इस तरह की strategy हम होटल मजदूर यूनियन और होटल वर्कर स्ट्रगल में भी अपनाते हैं ये broad thinking है even CITU को भी हम joint front में लिया हुआ है और एचएमएस को भी लिया है independent को भी लिया है। We know they are always busy, and they want everything to do catch up the trade union but they were failed everywhere.